वर्ष 46 अंक 5 मई 2019

हंसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 5 • मई 2019 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
16. समाचार
18. क्या आप जानते है?
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
47. अनमोल वचन
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

विशेष/लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन
22. बारहसिंगा
: दीपांशु जैन
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल
32. इसबगोल
: कैलाश जैन एडवोकेट
42. सफरनामा छाते का
: कैलाश जैन

कहानियां

8. दुर्गुणों से छुटकारा
: साभार
10. दण्ड का बदला
: सन्तोष गर्ग
19. बनाया पालतू
: मनोहर चमोली
26. मानव की कहानी
: शिवचरण मंत्री
31. सबसे अमीर कौन?
: राधेलाल 'नवचक्र'
39. योगदान
: सीताराम गुप्ता

कविताएं

9. हरे पेड़ की छांव
: राजकुमार जैन 'राजन'
9. वृक्ष
: हरिन्द्र सिंह गोगना
17. चिड़िया
: मीनू सिंह
17. गौरैया
: गौरीशंकर
25. सूरज
: कीर्ति श्रीवास्तव
25. सोनपरी सी किरणें
: भानुदत्त त्रिपाठी
41. खरबूजा
: ओ. पी. राजकुमार
41. मिठाई
: कीर्ति श्रीवास्तव
46. बाल कविताएं
: राधेलाल 'नवचक्र'

पहले सोचें, फिर बोलें

हम जब भी संवाद करते हैं तो वह वाणी एवं विचारों के द्वारा, पत्र-व्यवहार द्वारा अथवा बोल-चाल इत्यादि के द्वारा ही होता है। दूसरा व्यक्ति भी हमारी बात को, हमारे भाव और विचार को समझ जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मेरे भाव, विचार या बात को उसी तरह समझा जाता है, जिस तरह से मैं कहना चाहता हूँ और क्या मैं भी दूसरे की बात को, भाव को, विचार को उसी तरह समझ लेता हूँ। अगर हम सभी एक-दूसरे को सही समझ लेते हैं तो फिर यह कहा जा सकता है कि हमारा सम्प्रेषित करने का ढंग अति उत्तम है परन्तु साधारणत: हमें यही सुनने को मिलता है कि मैंने तो ठीक कहा था परन्तु दूसरे ने उसको ठीक से नहीं सुना। मैंने तो किसी और संदर्भ में कहा था और दूसरे ने किसी और संदर्भ में समझा। इस तरह जिसने ठीक नहीं समझा उससे पूछें तो वह भी यही कहेगा कि दूसरे के कहने का ढंग, हाव-भाव तथा भाषा ठीक नहीं थी। इस तरह की बात हम चाहे स्कूल में हो या कॉलेज में हो, कार्यालय में हो या घर में, व्यापार में हो या बाजार में, सभी को इस तरह की स्थितियों का सामना करना पड़ ही जाता है।

घर में बड़े भाई, छोटे भाई अगर बात करते हैं अथवा माता-पिता आपस में संवाद करते हैं तो वहाँ भी इस तरह की गलतफहमी हो जाती है। संवाद का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो एक-दूसरे को पूरी तरह से समझा जाना आसान भी है और मुश्किल भी। जहाँ कोई निहित स्वार्थ होता है वहाँ संवाद में, समझने में कठिनाई होती है और जहाँ कोई भी निहित स्वार्थ नहीं होता वहाँ कठिनाई भी नहीं होती।

हमारा निहित हित हो या न हो, अगर हमारे सम्प्रेषण का ढंग, हमारी भाव स्थिति साधारण, सरल एवं सहज हो तो बड़ी से बड़ी बात, कठिन से कठिन परिस्थिति में भी ठीक ढंग से कही और समझी जा सकती है। हमारे शब्द और शब्दों के प्रयोग का प्रयोजन सर्वहिताय की भावाना से ओत-प्रोत होगा तभी सभी के हृदय को छू सकेगा।

शब्द का भी अपना स्वाद होता है। इसका इस्तेमाल करने से पहले अगर हम स्वयं चख लें तो ज्यादा अच्छा होगा। अगर हमें उसका स्वाद अच्छा नहीं लगा तो वह दूसरे को भी अच्छा नहीं लगेगा, बल्कि खटकेगा। दूसरे के मन में ईर्ष्या और वैर को जगाने का कारण बनेगा; इसलिए हमें बहुत ही जागरूक होकर शब्दों को समय और स्थिति के अनुरूप ही प्रयोग करना चाहिए। अपने से पहले दूसरे की मानसिकता का ध्यान रखकर ही वाणी का प्रयोग करें। जैसे दूध या पानी गर्म करना हो तो उसको सीधा आग में नहीं डाल सकते, उससे तो आग भी बुझ जाएगी और पानी गर्म करने का हमारा कार्य भी अधूरा रह जाएगा। इसी प्रकार वाणी, शब्द और विचार सकारात्मक ढंग से प्रयोग किए जाएं तो वह हमारे स्वयं के लिए और सर्व-समाज के लिए उत्थान का कारण बन सकता है।

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने अपने प्रवचनों में अनेकों बार वाणी एवं वाणी को सही शब्दों में प्रयोग के लिए जोर दिया है और कहा– ''जो वाणी मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, मनुष्य के दिल में दूसरे के लिए प्यार, नम्रता और भाईचारे की भावना उजागर करे वही सही वाणी है।'' आज सारा मानवसमाज युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी की अमृत-तुल्य प्रेम-वाणी से अपने आपको कृतार्थ कर रहा है।

–विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 187

जिस दाते ने बख़शी तैनूं सुन्दर रूप जवानी ए।
इसनूं तूं इक छिन न भुल्लीं ज़ात एहदी लासानी ए।
ओह सत्गुर जो रब विखा दए मंगे कोई लेखा ना।
एसे नूं ही रब तूं मन्नीं खाई कदी भुलेखा ना।
सभ जीआं तों वड्डा तूं एं तेरा वी एह वाली ए।
बन्दया तेरा जीवन फिर वी याद एहदी तों ख़ाली ए।
तैनूं हौमैं रोग है बन्दे तेरा कुझ कसूर नहीं।
तूंहियों रब तों बेमुख होयैं रब ते तैथों दूर नहीं।
जे तूं मन दी हुज्जत छड के साधू शरनीं आवेंगा।
कहे अवतार इक छिन दे अन्दर जीवन मुक्ति पावेंगा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी संसार की रंग-बिरंगी माया में भूले इन्सान को सचेत करते हुए बता रहे हैं कि हे इन्सान! जिस प्रभु ने तुझे सुन्दर रूप और यौवन दिया है, तू इस अनुपम परम अस्तित्व परमात्मा को कभी न भूलना। पल-पल इसको याद रखना। यह अत्यन्त दयालु और क्षमावान है। इसने तेरे पिछले कर्मों को माफ करके तुझे यह मानव तन और इतना उत्तम ज्ञान प्रदान किया। इसने तेरे कर्मों का कोई लेखा नहीं मांगा और पलभर में परमात्मा का दर्शन करा दिया। ऐसे कृपालु सद्गुरु को परमात्मा रूप में स्वीकार करके निरन्तर इसका ही ध्यान करना है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि मनुष्य संसार के सभी जीवों में श्रेष्ठ है। मानव सहित समस्त जीव-जन्तुओं का स्वामी यह परमात्मा है। इस परमात्मा ने ही तुझे श्रेष्ठ जीवन दिया है फिर भी तू इसे याद नहीं करता। तेरा जीवन इसकी याद से खाली है। तूने इसे भुलाया हुआ है। मानव तुझे अहंकार का भयानक रोग लगा हुआ है, जिसके कारण ही तू परमात्मा से बेमुख होकर इससे दूर है। यह परमात्मा तेरे पास ही है। यह तुझसे दूर नहीं है, तू स्वयं ही इससे दूर हुआ है। इसमें तेरी भी गलती नहीं है, यह सब तेरे अभिमान के कारण है। मानव तन, मन, धन का व्यर्थ अहंकार करता है। जब तन, मन, धन में आने वाले परिवर्तनों पर इसका कोई जोर नहीं है तो इनके कारण अभिमान करना भी व्यर्थ है।

बाबा अवतार सिंह जी अहंकार को मानव और परमात्मा के बीच दूरी पैदा करने वाला बताते हुए कह रहे हैं कि इन्सान तू अपने मन की हील-हुज्जत, तर्क-वितर्क को छोड़ दे और सद्गुरु की शरण में आ जा। दयालु सद्गुरु एक क्षण में तुझे जीवन मुक्ति प्रदान कर तेरा जीवन सुखी कर देंगे। जब तक तू अपनी मनमत त्याग कर सद्गुरु की शरण में नहीं आता तब तक तू परमात्मा से दूर है और तब तक तू जीवन मुक्ति से भी दूर है।

बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। महापुरुषों, गुरुओं, अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही कल्याण सम्भव है। मानवता को अध्यात्मिकता से ही बचाया जा सकता है।

★ यदि सत्य न हो तो अहिंसा की रक्षा भी नहीं हो सकती।

★ पीड़ा तो स्वयं को संभाल लेती है लेकिन आनन्द का भार बांटने के लिए किसी मुनष्य का साथ होना जरूरी है।

★ जो वाणी मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, मनुष्य के दिल में दूसरे के लिए प्यार, भाईचारा और नम्रता की भावनाएं उजागर करे, वही सही वाणी है।

★ जब मन निर्मल हो गया तो जीवन भी निर्मल हो जायेगा।

★ जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं उनमें ही पवित्रता है, पावनता है।

★ हमेशा विनम्रता, प्यार, करुणा और दया के भाव से युक्त रहना चाहिए।

★ मन में यही शुकराने का भाव हमेशा बना रहे कि मालिक तेरी कृपा है जो तूने सब कुछ दिया है न दिया होता तो मैं आगे देने वाला कौन हूँ?

★ मानव की हत्या करना किसी भी धर्मगुरु, पीर-पैगम्बर की शिक्षा नहीं रही। धर्म तो जोड़ना सिखाता है इसलिए निरीह नागरिकों की हत्या किसी प्रकार धार्मिक कृत्य हो नहीं सकता। जीवन को हानि पहुँचाकर मानव किसी को भी लाभ नहीं पहुँच सकता बल्कि स्वयं उसे भी अनेकों प्रकार के नुकसान उठाने पड़ेंगे।

★ ज्ञान और जवाहरात को छिपाकर रखने में उनकी कीमत और आभा नष्ट हो जाती है।

★ अच्छे गुण सदैव मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं।

★ व्यर्थ कर्म भारीपन व थकान लाते हैं जबकि श्रेष्ठ कर्म हमें प्रसन्न व हल्का बनाकर ताजगी प्रदान करते हैं।

★ यदि तुम अच्छे रास्ते पर हो तो संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

★ ईमानदार व्यक्ति हमेशा प्रसन्न एवं सुखी रहता है तथा ईमानदारी की सदैव विजय होती है।

★ जैसे प्रकाश सूर्य का, खुशबू फूल का प्रतीक है उसी प्रकार इन्सानियत इन्सान का प्रतीक है।

★ शान्ति के लिए एकता और मानवता का होना जरूरी है।

★ सभी के साथ अपनेपन की भावना से युक्त व्यवहार करो। नफरत किसी से नहीं सबसे प्यार करो।

★ सन्तजन परोपकारी होते हैं जो स्वयं के जीवन को तो संवारते ही हैं, दूसरों के जीवन को संवारने के लिए भी प्रयासरत रहते हैं।

★ यदि मानव परमपिता-परमात्मा को जीवन का आधार बनाकर, सभी को प्रभु का रूप मानकर जीवन व्यतीत करेगा तो प्रेम, भाईचारे व भक्ति की भावना का विकास होगा।

★ जहाँ अहंकार है वहाँ प्यार नहीं होता।

★ जिस प्रकार हम अपनी सूरत को सुन्दर बनाने के लिए तरह-तरह के पदार्थों का इस्तेमाल करते हैं, उसी प्रकार हम अच्छी सोच, मधुर वाणी व सुन्दर भावनाओं द्वारा अपनी सीरत को भी सुन्दर बनाएं।

★ परमात्मा ही शाश्वत् सत्य है बाकी दुनिया मिथ्या है। प्रकृति की हर वस्तु परिवर्तनशील है लेकिन यह परमसत्ता स्थिर, शान्त, एकरस है।

★ सुन्दर जीवन उन्हीं का बनता है जो नाम और भक्ति के रंग में रंगे रहते हैं। समर्पण भाव मजबूत रहता है। अपने अस्तित्व को भुलाकर प्रभु के प्रति समर्पित रहता है।

★ भक्त की सच्ची प्रीत होती है। कैसी भी परिस्थिति हो भक्त डगमगाता नहीं है। किसी विपरीत बहाव में बह नहीं जाता अपितु मन की मजबूती के साथ अपनी प्रीत निभाता है।

★ 'एक को जानो', 'एक को मानो', 'एक हो जाओ।' जब यह एकत्व का भाव साकार होगा तभी भेदभाव वाली दृष्टि, समदृष्टि में बदल जायेगी।

★ धरती को सजाने-संवारने के लिए प्यार की सबसे अधिक जरूरत है। घर, परिवार, समाज के वातावरण को सुखद बनाने के लिए प्यार की जरूरत है।

★ जिस प्रकार सागर के बिना लहरें नहीं होती। इसी प्रकार प्रभु के बिना सृष्टि अस्तित्व में नहीं आ सकती।

– संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

प्रेरणादायक कहानी

दुर्गुणों से छुटकारा

एक बार रामपुर गाँव में पंचायत लगी थी। गाँव की एक समस्या पर पंच विचार कर रहे थे। वहीं थोड़ी दूरी पर एक संत ने अपना बसेरा किया हुआ था। जब पंचायत किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकी तो किसी ने कहा कि क्यों न हम संत जी के पास अपनी समस्या को लेकर चलें। अत: सभी संत के पास पहुँचे। जब संत ने गाँव के लोगों को देखा तो पूछा कि कैसे आना हुआ?

लोगों ने कहा– महात्मा जी! गाँव भर में एक ही कुआँ है और कुएँ का पानी हम नहीं पी सकते क्योंकि कुएँ के पानी से बदबू आ रही है। मन भी नहीं होता ऐसा बदबूदार पानी पीने को।

संत ने पूछा– हुआ क्या? पानी में बदबू का क्या कारण है?

लोग बोले– तीन कुत्ते लड़ते-लड़ते उसमें गिर गये थे। बाहर नहीं निकले, उसी में मर गये। अब जिसमें कुत्ते मर गए हों, उसका पानी कौन पिये महात्मा जी?

संत ने कहा– एक काम करो, उसमें गंगाजल डलवाओ। तो कुएँ में गंगाजल भी आठ दस बाल्टी डाल दिया गया। फिर भी समस्या जस की तस! लोग फिर से संत के पास पहुँचे।

अब संत ने कहा– 'भगवान की पूजा कराओ।' लोगों ने कहा– ठीक है।

भगवान की पूजा करवाई फिर भी समस्या जैसी की तैसी थी। लोग फिर संत के पास पहुँचे। अब संत ने कहा– उसमें सुगंधित द्रव्य डलवाओ। लोगों ने फिर कहा 'हाँ, अवश्य।' सुगंधित द्रव्य डाला गया। नतीजा फिर वही ढाक के तीन पात। लोग फिर संत के पास गए। अब संत खुद चलकर आये।

लोगों ने कहा– महाराज! वही हालत है, हमने सब करके देख लिया। गंगाजल भी डलवाया, पूजा भी करवायी, प्रसाद भी बाँटा और उसमें सुगन्धित पुष्प और बहुत सी चीजें डालीं। लेकिन हालत वही की वही है।

संत आश्चर्यचकित हुए कि अभी भी इनका कार्य ठीक क्यों नहीं हुआ? फिर संत ने पूछा– तुमने और सब तो किया परन्तु वे तीन कुत्ते मरे पड़े थे, उन्हें निकाला कि नहीं?

लोग बोले– उनके लिए न तो आपने कहा था, न हमने निकाला, बाकी सब किया। वे तो वहीं के वहीं पड़े हैं।

संत बोले– जब तक उन्हें बाहर नहीं निकालोगे, इन उपायों का कोई प्रभाव नहीं होगा।

सही बात यह है कि हमारे आपके जीवन की भी यही कहानी है। इस शरीर नामक गाँव के अंत:करण के कुएँ में ये काम, क्रोध और लोभ के तीन कुत्ते लड़ते-झगड़ते गिर गये हैं। इन्हीं की सारी बदबू है। हम उपाय पूछते हैं तो लोग हमें कर्मकांडों में डाल देते हैं। ऐसे समय में आवश्यकता कर्मकांडों या अन्य उपायों की नहीं है बल्कि समस्या के मूल को समझकर उसका उचित उपाय करना है।

कथा सार: पहले हम सभी अपने भीतर के दुर्गुणों को निकाल कर बाहर करें तभी हमारा जीवन उपयोगी होगा। इधर-उधर के उपाय करने से बेहतर है कि पहले हम अपने आप पर ध्यान दें। खुद में बदलाव लायें, तत्पश्चात ही किसी सुधार की गुंजाइश हो सकती है।

– साभार

कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

हरे पेड़ की छांव

प्यारी और दुलारी लगती,
हरे पेड़ की छांव।
इसको छोड़ कहीं जाने में,
रूक जाते हैं पांव।।

कोयल बैठी चिड़िया बैठी,
हमें सुनाती गाना।
जाने वाले राहगीर फिर,
लौट यहीं पर आना।।

इसी छांव में खेल खेलते,
खुश रहते हैं बच्चे।
कभी न चाहो बुरा किसी का,
सदा रहो तुम सच्चे।।

आओ, मिलकर नाचें-गायें,
जैसे अपना गांव।
मां की ममता-सी लगती है,
हरे पेड़ की छांव।।

बाल कविता : हरिन्द्र सिंह गोगना

वृक्ष

हरे भरे यह भाते वृक्ष।
खुशहाली हैं लाते वृक्ष।

छाया, फल देते हमको।
हरियाली फैलाते वृक्ष।

ऑक्सीजन जो जीवन है।
हम तक पहुँचाते वृक्ष।

संग पवन के झौंकों के।
गाना भी हैं सुनाते वृक्ष।

आमों जैसे मीठे फल।
खूब हमें हैं खिलाते वृक्ष।

जब आती है वर्षा रानी।
जी भरकर हैं नहाते वृक्ष।

कहानी : सन्तोष गर्ग

दण्ड का बदला

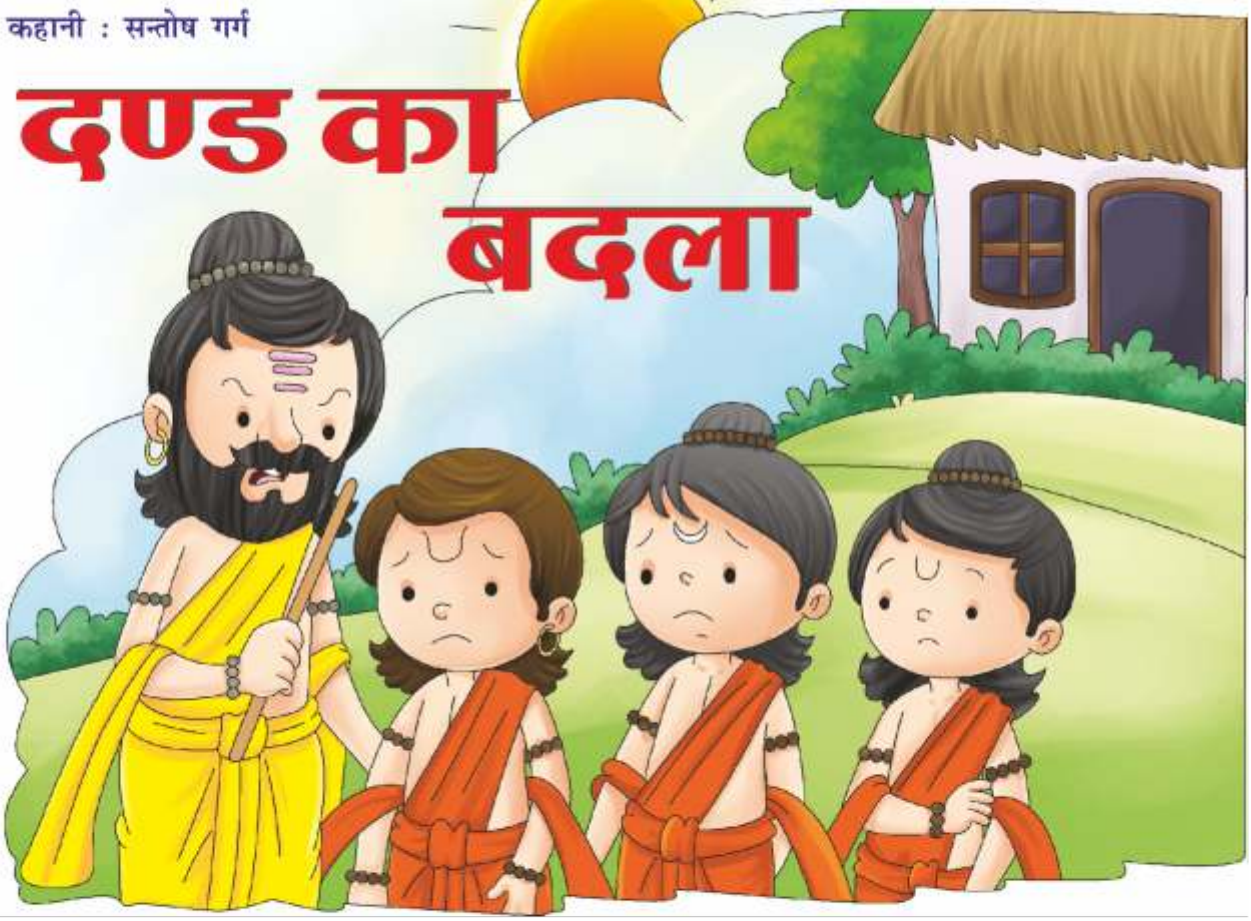

वाराणसी का राजकुमार ब्रह्मदत्त अध्ययन के लिए तक्षशिला पहुँचा। एक आचार्य के नेतृत्व में उसका शिक्षण आरम्भ हुआ। राजकुमार बहुत अभिमानी था। उसे अपनी राज्यसत्ता पर अतिशय गर्व था। विद्यार्थियों के साथ वह आचार्य के पास पढ़ता पर अपने आपको सबसे ऊँचा समझता।

आचार्य प्रतिदिन प्रातःकाल शिष्यों के साथ घूमने के लिए जाते। वह राजकुमार भी उनके साथ जाता। आचार्य आगे-आगे चलते और शिष्य समुदाय पीछे-पीछे। रास्ते में एक बुढ़िया का घर भी पड़ता था। एक बार बुढ़िया ने अपने घर के आगे तिल सुखाने के लिए रख छोड़े थे। राजकुमार उधर से गुजरा तो उसने एक मुट्ठी तिल उठा लिए। बुढ़िया ने उसे देखा पर कुछ न कहा। इसी प्रकार वह दूसरे व तीसरे दिन भी तिल उठाता रहा। बुढ़िया से यह देखा नहीं गया। उसे अपने तिलों की चिन्ता नहीं थी पर एक विद्यार्थी में जीवन के प्रारम्भिक चरण में चोरी की आदत पड़ रही थी यही उसकी चुभन थी। उसने राजकुमार को जोर से कुछ कहा। आचार्य ने यह सब सुना तो पीछे घूमकर देखा और घटना को जानकर अपने शिष्य को डांटा। राजकुमार को यह बहुत बुरा लगा।

बुढ़िया ने आचार्य की ओर घूरते हुए देखा और कहा– रोग का अभी तक सही उपचार नहीं हुआ है।

राजकुमार को उसी समय डंडे की मार पड़ी। राजकुमार का सिर लज्जा से झुक गया। उसके बाद उनका अध्ययन चलता रहा और राजकुमार भी पढ़ता रहता।

कुछ वर्षों के बाद अध्ययन समाप्त कर राजकुमार वाराणसी लौट आया। धीरे-धीरे वह राज्य व्यवथाएं सम्भालने लगा। इस प्रकार वह राजा बन गया। वह हमेशा अपनी सुख-सुविधाएं भूलकर जनता के हित में प्रयत्नशील रहता। इतना होते हुए भी आचार्य द्वारा दी गई यातना की चुभन उसे प्राय: याद आ जाती। घटना की स्मृति ने उसे बहुत व्यग्र बना दिया। उसने अपना एक विशेष दूत तक्षशिला भेजा और आचार्य को आमन्त्रित किया। आचार्य वाराणसी पहुँच गए। उसने आचार्य को राजसभा में बुलाया और वह घटना सुनाते हुए बोला, "उस दिन आपने मुझे छड़ी से तीन बार पीटा था। उस समय क्या आप भूल गए थे कि एक राजा को पीटने का क्या परिणाम हुआ करता है? यदि अब मैं आपको दण्ड देता हूँ तो उसका क्या परिणाम हो सकता है?" उसने आचार्य को कारागार में डालने का आदेश दे दिया।

राजा के आदेश को सुनकर सभा सन्न रह गई। एक आचार्य का ऋण इस प्रकार चुकाया जाएगा? यह कोई सोच भी नहीं सकता था। राजा यह आदेश देकर फूला नहीं समा रहा था। उसको तो ऐसी अनुभूति हो रही थी कि वर्षों का गहरा घाव आज एक साथ भर गया हो। उसने अपने मंत्री से पूछा– आचार्य द्वारा निहित दोष के प्रतिकार के लिए इससे सुन्दर और क्या आदेश हो सकता है। मैंने उचित ही तो किया है न?

मंत्री एक क्षण मौन रहे। राजा ने पूछा– बोलते क्यों नहीं?

मंत्री ने निवेदन किया– यह आप जैसे कुशल प्रशासक के लिए उचित नहीं है।

राजा ने आश्चर्य से पूछा– तो इसका और क्या प्रतिकार हो सकता है?

मंत्री – महाराज! प्रतिकार की आवश्यकता नहीं थी अपितु पुरस्कार की आवश्यकता थी।

राजा – मुझे पीटने वाले को पुरस्कार? तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है क्या?

मंत्री – महाराज! यदि ऐसा न हुआ होता तो आप जैसे कुशल प्रशासक आज हमें कैसे प्राप्त होते?

राजा – मंत्री, मेरे इन प्रशासनिक अनुभवों के साथ उस घटना का क्या सम्बन्ध है?

मंत्री – महाराज! प्रत्येक छोटी से छोटी घटना जीवन को एक महत्वपूर्ण मोड़ दे देती है। उस दिन अगर ऐसा न हुआ होता तो सम्भवत: आप में चोरी की आदत पड़ जाती। वह एक बुराई जीवन में अनेक बुराइयों को जन्म दे देती।

राजा को अपनी गलती का भान हुआ। उसने मंत्री की बात से सहमति व्यक्त करते हुए मंत्री से पूछा– तो अब क्या करना चाहिए?

मंत्री – महाराज! आपको इन्हें राजपुरोहित बनाना चाहिए।

मंत्री की बात सुनकर राजा के मन को फिर धक्का-सा लगा। मुझे पीटने वाला राजपुरोहित?

मंत्री – हाँ महाराज! इससे आप भविष्य में कोई गलती नहीं कर सकेंगे। समय-समय पर आपको इनसे मार्गदर्शन मिलता रहेगा। ऐसे आचार्य तो सौभाग्य से किसी-किसी को ही मिलते हैं। आपको इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

राजा को यह बात भा गई। उसने हृदय से क्षमा मांगी, उन्होंने अपने आचार्य के चरण छुए और उन्हें अपने हाथों से राजपुरोहित के आसन पर आरूढ़ किया।

दादा जी

चित्राकन एव लेखन
अजय कालड़ा

जादूगर ने युवक से पूछा- तुम जादू क्यों सीखना चाहते हो?
युवक बोला- मैं जादू से अपनी इच्छानुसार वस्तुएं पाना चाहता हूँ।
जादूगर ने युवक को समझाया कि यह सब वस्तुएं तुम आवश्यकता अनुसार मेहनतकरके भी प्राप्त कर सकते हो।
युवक नहीं माना और बोला- मैं ये सब जादू से पा कर लोगों को आश्चर्यचकित करना चाहता हूँ।
युवक की जिद पर जादूगर ने कहा- ठीक है मैं तुम्हे एक गुर (मंत्र) देता हूँ जो तुम्हे यहीं बैठ कर याद करना होगा जब तक मैं जादू दिखा रहा हूँ।

जादूगर ने एक कागज पर गुर लिखा और युवक को देकर जादू दिखाना शुरू कर दिया।
उसका जादू का खेल इतना आकर्षक था कि लोग बार-बार तालियां बजा कर उसका उत्साहवर्द्धन कर रहे थे। जादूगर ने 30 मिनट में ही अपना खेल समाप्त कर दिया।
खेल समाप्त होते ही जादूगर ने युवक से वह कागज वापस लेकर मंत्र सुनाने को कहा। युवक मंत्र सुनाने में असफल रहा।
जादूगर ने पूछा - 'तुम्हें गुर याद क्यों नहीं हुआ'।

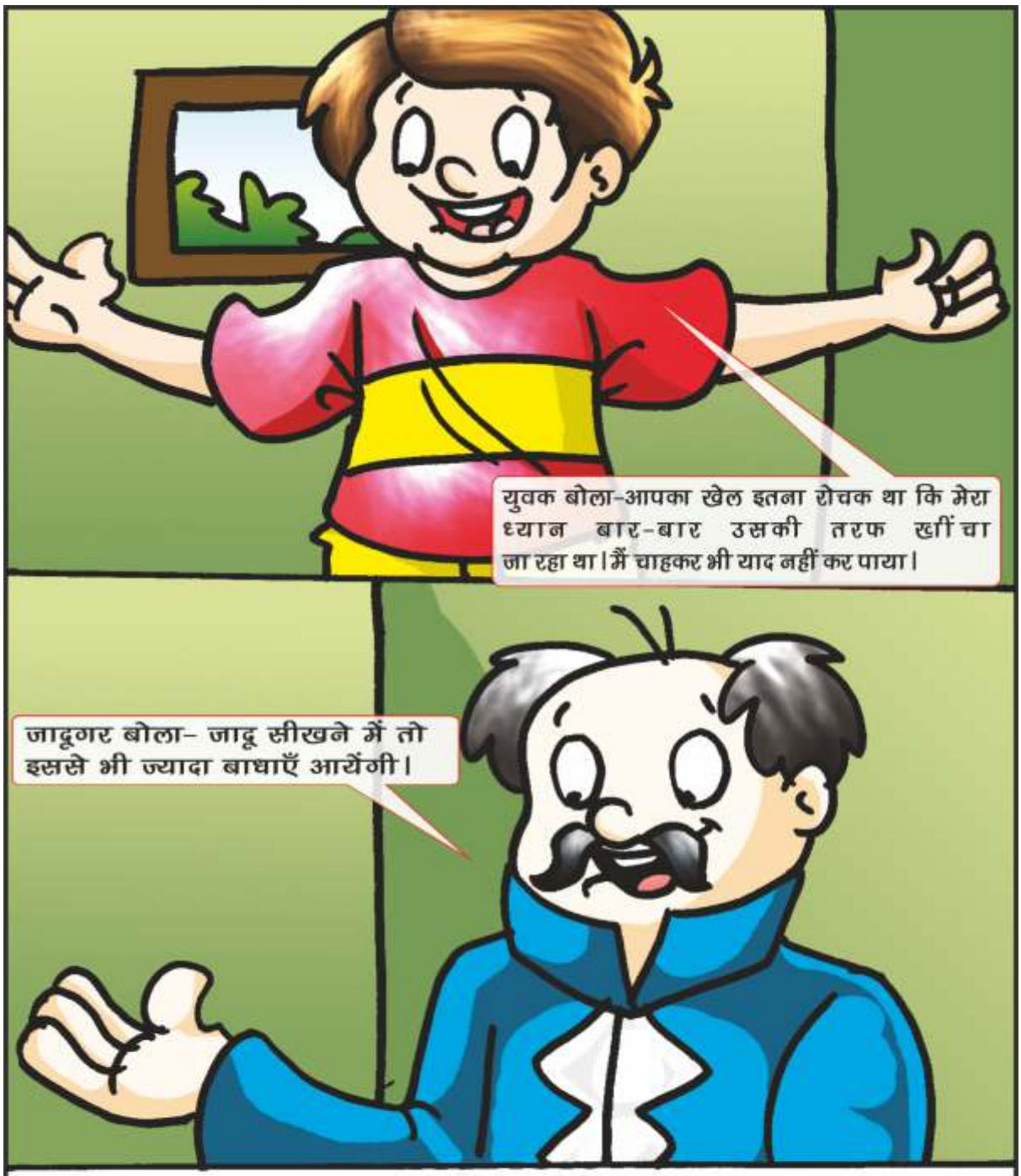

जादूगर ने आगे कहा- जब तुम अपने मन को ही वश में नहीं कर सकते तो दूसरी वस्तुओं को अपने वश में कैसे करोगे। सच तो यह है, कि मैं जादू जानने के बाद भी अपनी इच्छा से कुछ भी वश में नहीं कर सकता। बल्कि जादू के माध्यम से रोजी-रोटी कमाता हूँ। जिन्दगी को जादू या सपनों के साथ मत जोड़ो, परिश्रम करो और यथार्थ में जिओ क्योंकि जादू और हक़ीकत में फर्क होता है।

नासा का खोजी यान बेनू पहुँचा

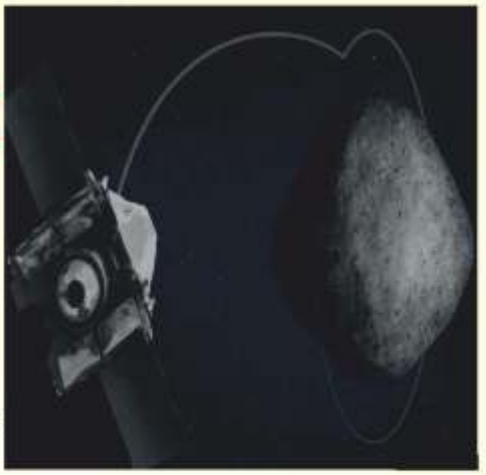

वॉशिंगटन (आईएएनएस)। एक क्षुद्रग्रह से नमूना एकत्र करने के लिए भेजा गया नासा का पहला अंतरिक्ष यान अब अपने गंतव्य, क्षुद्रग्रह बेनू पर पहुँचा गया है। नासा ने कहा कि द ओरिजन्स, स्पेक्ट्रल इंटरप्रीटेशन, रिसोर्स आइडेंटिफिकेशन, सिक्युरिटी-रीगोलिथ एक्सप्लोरर (ओएसआईआरआईएस-आरीएक्स) अंतरिक्ष यान बेनू पहुँचा गया है। इसके पहले इस यान ने अंतरिक्ष में दो साल से अधिक समय में दो अरब किलोमीटर से अधिक की दूरी तय की है।

यह अंतरिक्ष यान लगभग एक साल तक पांच वैज्ञानिक उपकरणों के साथ क्षुद्रग्रह का सर्वेक्षण करेगा। यह यान सुरक्षित और वैज्ञानिक रूप से दिलचस्प नमूने एकत्र करने के लिए एक स्थान का चुनाव करेगा और सितम्बर 2023 में पृथ्वी पर वापस आ जाएगा।

– संकलनकर्ता : बबलू कुमार

पृथ्वी से तीन गुना बड़े ग्रह की खोज

वैज्ञानिक सौरमंडल के बाहर के ग्रहों की खोज में जुटे हुए हैं। हाल ही में इस संबंध में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा को महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। उसके अभियान दल ने एक और ग्रह की खोज की है जो कि पृथ्वी से तीन गुना बड़ा है।

पृथ्वी से 53 प्रकाशवर्ष दूर रेटीकुलम तारामंडल के सूर्य के समान चमकीले ड्वार्फ (बौने) तारे का चक्कर लगा रहा है। तारे से नजदीक होने के बाद भी एचडी 21749बी ग्रह की सतह का तापमान 300 डिग्री फारेनहाइट ही है।

इस ग्रह की खोज से जुड़ी मैसाचयुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की डायना ड्रैगोमिर का कहना है कि एचडी 21749बी इतने गर्म तारे की परिक्रमा करने वाला अब तक का सबसे ठंडा ग्रह है। पृथ्वी से तीन गुना बड़ा और 23 गुना भारी ग्रह को सब-नेपच्यून वर्ग में रखा गया है। इसका ज्यादातर हिस्सा गैसीय है और इसका वायुमंडल नेपच्यून और यूरेनस से घना है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पानी के कारण इसका वायुमंडल घना है और इस पर जीवन की संभावना भी हो सकती है।

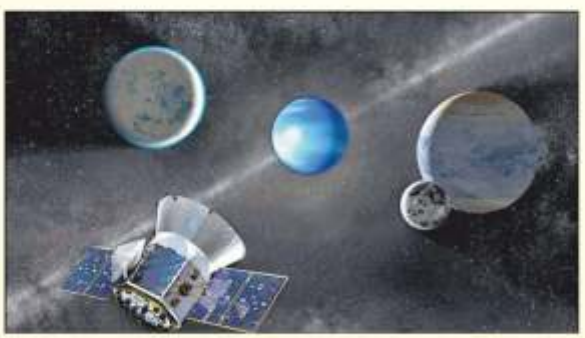

नासा के ट्रांजिटिंग एक्सोप्लैनेट सर्वे सैटेलाइट (टीईएसएस) द्वारा खोजा गया यह तीसर ग्रह है। नासा ने इसे पिछले साल अप्रैल में लांच किया था। अगस्त में इसने पहली तस्वरी भेजी थी। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि दो साल के अभियान के दौरान यह करीब 20 हजार बाहरी ग्रहों की खोज करेगा। इसके लांच होने से पहले केवल 3800 एक्सोप्लैनेट का पता चल पाया था।

एचडी 21749बी को अपने तारे की परिक्रमा पूरी करने में 36 दिन लगते हैं। टीईएसएस द्वारा पहले खोजे गए ग्रह पाई मेनसेई बी और एलएचएस 3844बी को अपने तारों की परिक्रमा में क्रमश: 6.3 दिन और 11 दिन लगते हैं।

प्रस्तुति : डॉ. विनोद गुप्ता

बाल कविता : मीनू सिंह

चिड़िया

एक थी चिड़िया मोटी-ताजी,
उड़ने से लाचार थी।
ऊपर से तो स्वस्थ दिख रही,
अन्दर से बीमार थी।

चलते फिरते दाना खाती,
पानी पीती गटर-गटर।
फूल की सेज पर बैठी-बैठी,
सोती रहती थी दिनभर।

बंदर भालू उसे समझाते,
किया करो तुम भी कुछ काम।
काम करोगी स्वस्थ रहोगी,
सुस्ती छोड़ो त्यागो आराम।

धीरे-धीरे बात पते की,
समझ गई चिड़िया रानी।
अपने काम स्वयं अब करती,
दूर हुई सब परेशानी।

कविता : गौरी शंकर वैश्य

गौरैया

मैं हूँ गौरैया प्यारी,
नन्हीं सी न्यारी-न्यारी।

अच्छी लगती हरियाली,
फुर-फुर उड़ती मतवाली।

छोटा-सा उद्यान सजाओ,
प्रेमभाव से मुझे बुलाओ।

चोंच में हूँ दाना लेती,
चूजों को 'चुग्गा' देती।

'नेक बनो' सिखलाती हूँ,
'एक रहो' बतलाती हूँ।

दाना-पानी जो देते,
मैं हूँ उनकी आभारी।

कोयल, कठफोड़वा, बुलबुल,
मेरे सब साथी चुलबुल।

बातें करते शाम-सवेरे,
वृक्ष कटें तो कहाँ बसेरे।

पर्यावरण प्रदूषित न करो,
मैं हूँ गौरैया प्यारी।

–संग्रहकर्ता : विकास कुमार बंसल (बछवाड़ा, बेगूसराय)

क्या आप जानते हैं?

★ संसार की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीलंका की सीरीमावो भण्डारनायके थी।

★ चीन की दीवार को मजबूत बनाने के लिए ईंटों में चावल के आटे का प्रयोग किया गया था।

★ हाथी एकमात्र जानवर है जो कूद नहीं सकता।

★ प्रतिक्षण सूर्य के गर्भ से निकलने वाली ऊर्जा सौ अरब परमाणु बमों के बराबर होती है।

★ पानी की गहराई तक डुबकी लगाने के लिए मगरमच्छ पत्थर निगल लेते हैं।

★ रेडियो को पांच करोड़ लोगों तक पहुँचने में 38 वर्ष लगे थे, जबकि टेलीविजन को इतने ही लोगों तक पहुँचने में तेरह वर्ष लगे। इण्टरनेट केवल चार वर्षों में ही पांच करोड़ लोगों तक पहुँच गया।

★ भारत के सुपर कम्प्यूटर का नाम 'परम' है।

★ प्राचीन यूनान में अपोलो को सूर्य का देवता भी कहा जाता था।

★ यूनिसेफ का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है।

★ हमारी भौहों को ऊँचा करने में 30 मांसपेशियों की जरूरत होती है।

★ सहरिया जनजाति राजस्थान में पायी जाती है।

★ किसी व्यक्ति की पहचान करने के लिए उसके 'फिंगर प्रिंट' यानी अंगुलियों के निशान लिये जाते हैं। अगर किसी कुत्ते की पहचान करनी हो तो उसकी 'नोजप्रिंट' यानी नाक के प्रिंट लिये जाते हैं।

★ केकड़े के दांत पेट में ही होते हैं।

★ विश्व में स्विटजरलैंड एकमात्र ऐसा देश है, जिसके झंडे का आकार चौकोर है।

★ ऑक्टोपस की आँखों की पुतली आयताकार होती हैं।

★ जिस दिन पूरा चाँद निकलना होता है, उस दिन सूर्यास्त होते ही चाँद का निकलना शुरू हो जाता है।

★ नील नदी का पानी गर्म होता है।

★ विश्व का सबसे बड़ा महासागर प्रशान्त महासागर है।

★ साइबेरिया की बैकाल झील विश्व की सबसे गहरी झील है।

★ चुम्बक का पहाड़ पाकिस्तान में है।

★ इन्द्रवती उद्यान छत्तीसगढ़ राज्य में है।

★ केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला में है।

★ एक तितली की 1200 आँखें होती हैं।

★ लेमन शार्क के एक वर्ष में 24 हजार नये दांत आ जाते हैं। दांतों का नया सेट 14 दिन में पनप जाता है।

★ आमतौर पर मकड़ी की आठ आँखें होती हैं फिर भी ये ठीक प्रकार से नहीं देख पातीं।

★ छींकते समय व्यक्ति की दोनों आँखें पूर्ण खुली रहें, यह असम्भव है।

★ पतंगे का जीवनकाल 24 घंटों से ज्यादा नहीं होता।

बाल कहानी : मनोहर चमोली 'मनु'

बनाया पालतू

बहुत पुरानी बात है। गरुड़ ने शेर से कहा– शेर महाराज! गजब हो गया। मैंने ऐसा प्राणी पहले नहीं देखा। वो बंदर जैसा है पर बंदर नहीं। वह चौपाया है, पर दो पांवों पर खड़ा हो जाता है। कुत्ता उसके सामने पूंछ हिलाता है। गाय उसके खूंटे बंधी है। बिल्ली उसके दरवाजे पर बैठी रहती है। उसके पास अजीब से हथियार हैं। वो पेड़ काट रहा है। धरती को समतल बना रहा है। अग्नि को भी उसने बंधक बना लिया है। वो प्राणी अपनी इच्छा के अनुसार आग को जलाता और बुझाता है।

यह सुनकर शेर उछल पड़ा। कहने लगा– आपातकाल बैठक बुलाओ। अभी इसी वक्त।

मानव जंगल में बस्तियां बनाने लगा था। उसने खेती करना शुरू कर दिया था। मानव के आने की सूचना जंगल में आग की तरह फैल गई। गरुड़ के बाद चील, गिद्ध, बाज, चमगादड़ और कौआ भी मानव का हुलिया सभी को बता रहे थे। सबके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं।

हाथी बोला– अब वो दिन दूर नहीं जब ये मानव जंगल पर अपना कब्जा कर लेगा। अब क्या होगा? हम कहाँ रहेंगे? कहाँ जाएंगे?

तितली बीच में ही बोल पड़ी– हमारा क्या होगा? वो फूलों को भी नष्ट करेगा।

सांप बोला– हाथी दादा, तुम चार पैर वाले हो। उड़ने वालों का भी कुछ नहीं बिगड़ेगा। पर हमारा क्या होगा? हमारी सोचो। हम कहाँ रहेंगे?

शेर गुर्राया। बोला– तुम खामोश रहो। जंगल कटेगा तो हम सब बर्बाद हो जाएंगे। उस मानव के इरादे नेक नहीं लग रहे हैं। हम सभी को मिलकर

कुछ सोचना चाहिए। तुम सब नहीं रहोगे, तो मुझे कौन पूछेगा। मैं उस मानव को जंगल में घुसने ही नहीं दूंगा।

सांप ने फुफकारते हुए कहा– जो डर गया सो मर गया। हम सभी को एकजुट होना होगा। बारी-बारी से जंगल में पहरा देना होगा। हमें मिलकर मानव पर हमला बोलना होगा। हम हजारों हैं। वो अकेला है। फिर हम उससे क्यों डरें।

सब जोश में आ गये। सांप की बात में दम था। घोड़े ने कहा– रात की पहरेदारी मैं करूंगा। मेरी बनावट ही ऐसी है कि मैं लम्बे समय तक बैठ नहीं सकता। मैं थोड़ी देर के लिए भी लेट नहीं पाता। बैठने पर मेरा सारा वजन गर्दन और पेट के बीच में आ जाता है। फिर मुझे सांस लेने में परेशानी होती है। यही कारण है कि मुझे नींद कम आती है। नींद भी मैं खड़े-खड़े ही पूरी कर लेता हूँ। प्रकृति ने मुझे ऐसा बनाया है कि मैं चौबीस घंटे खड़ा रह सकता हूँ। मैं कभी थककर नहीं गिरता।– सबने घोड़े के लिए तालियां बजाईं।

शेर बोला– हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम चौकस रहें। याद रखो। सुना है मानव बहुत चालाक है। कोई उसकी बातों में मत आना।– बैठक समाप्त हो गई। सब सतर्क हो गये। घोड़ा जिम्मेदारी से निगरानी कर रहा था। हल्की-सी आहट पर वो सजग हो जाता। कई दिन गुजर गये। चील, बाज और गरुड़ मानव के बारे में दिलचस्प सूचनाएं देते रहते। हर कोई मानव से डरा हुआ था। घोड़ा मन ही मन सोचता– मानव से पहली मुलाकात मेरी ही होगी। मैं ही सबसे पहले उससे बात करूंगा। घोड़ा मानव के बारे में ही सोचता रहता। एक रात मानव आ ही गया।

घोड़ा मानव को एकटक देखता रहा। फिर बोला– तो तुम हो मानव! यहाँ क्यों आए हो?

मानव बोला– तुम्हें लेने।

घोड़ा अपना भय छिपाता हुआ बोला– मुझे लेने! क्यों? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

मानव ने कहा– मुझे अच्छे दोस्त की तलाश है। वफादार साथी की। वह सब गुण सिर्फ तुम्हारे पास हैं।

घोड़े ने अपना डर छिपाते हुए

पूछा– मगर हमने तो सुना है कि तुमने गाय, कुत्ता और बिल्ली को बंधक बनाया हुआ है?

मानव ने मुस्कुराते हुए कहा– नहीं तो! वो तो अपनी मर्जी से मेरे साथ रह रहे हैं। वो मेरे साथ सुरक्षित हैं। मैं उन्हें भोजन देता हूँ। वो मेरे साथ खुश हैं। तुमने कभी चने चबाएं हैं। तुम्हारी कभी किसी ने मालिश की है? तुमने ताकत बढ़ाने वाला सूप पिया है? तुमने कभी मीठा और नमकीन भोजन किया है? नहीं न! तुम तो सिर्फ हरी घास खाना जानते हो। अच्छा चलो। एक काम करते हैं। तुम चुपचाप मेरे साथ मेरे डेरे में चलो। इन सब चीजों को चख लो। पसन्द आएं तो मेरे साथ रहना। नहीं तो सुबह होने से पहले वापस लौट आना। किसी को कानों-कान खबर भी नहीं होगी।

मानव ने चिकनी-चुपड़ी बातें कीं। घोड़ा उसकी बातों में आ गया। मानव बोला– ऐसे तो देर लगेगी। मैं तुम्हारी पीठ पर बैठ जाता हूँ। तुम तेज दौड़ लगाओ।– घोड़ा मान गया। बस फिर क्या था। मानव घोड़े को सहलाते हुए अपने डेरे ले गया। मानव ने घोड़े की मालिश की। घोड़ा मानव के सामने नतमस्तक हो गया। उसे पता ही नहीं चला कि कब मानव ने उसकी पीठ पर काठी पहना दी। बातों ही बातों में उसे बांध दिया। भरपेट चने खिलाए और स्वादिष्ट बत्तीसा खिलाया। घोड़ा मानव का गुलाम हो गया। तभी से जंगल के जीव-जन्तु मानव को देखकर डरते हैं। जो मानव की बातों में आ गये, मानव ने उन्हें पालतू बना लिया।

जीव-जन्तु : दीपांशु जैन

शानदार सींगों वाला : बारहसिंगा

बारहसिंगा अपने सुन्दर और शानदार सींगों के कारण अन्य हिरणों से अलग पहचान रखते हैं। इनका परिवार काफी बड़ा है और इनकी अनेक प्रजातियां हमारे देश में पाई जाती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध के रेंडियर को छोड़कर शेष सभी बारहसिंगों में नर के सींग बड़े होते हैं। इस परिवार के अन्य बारहसिंगों में हांगुल, सांभर, चीतल, पाढ़ा, काकड़ व कस्तूरी मृग हैं। बारहसिंगा (स्वाम्प डियर) को दलदली हिरण भी कहा जाता है।

बारहसिंगा का नाम आते ही हमारे दिमाग में एक विशालकाय जानवर की तस्वीर उभरती है। आमधारणा है कि इसका नाम बारहसिंगा इसलिए है क्योंकि इसके 12 सींग होते हैं। दरअसल इसके मूल सींग तो दो ही होते हैं पर इनकी शाखाएं 12 होती हैं और यह भी जरूरी नहीं है कि ये पूरी 12 ही हों। 12 से कम भी होती हैं और अधिक भी। अधिक से अधिक 17 शाखाओं वाले मृग भी देखे जा सकते हैं।

बारहसिंगे की औसतन ऊँचाई 135 सेंटीमीटर तथा भार 170-180 किलोग्राम के मध्य होता है। लम्बे-चौड़े शारीरिक ढांचे के कारण इनका वजन भी अधिक होता है। कभी-कभी वजन में ये शेर को भी मात करते हैं। इसके सींग 75 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। जिनकी परिधि 13 सेंटीमीटर होती है। इसके प्रत्येक सींग में शाखाएं फूटी रहती हैं।

बारहसिंगा मृग की नस्ल भारत से बाहर भी मिलती है। पहले-पहले यह नस्ल स्कॉटलैण्ड के जंगलों में देखी गयी। न्यूयॉर्क के जियोलॉजिकल पार्क में भी बारहसिंगे उपलब्ध हैं। उन देशों में इन्हें रेड डियर (लाल मृग) कहते हैं। भारतीय तथा विदेशी बारहसिंगों के शरीर और सींगों की रचना मिलती-जुलती है। हाँ, हल्का-सा रंग भेद अवश्य है।

बारहसिंगा बहुत सुडौल होता है। इसके शरीर के बाल कड़े और मोटे होते हैं। जो गर्दन के पास काफी लम्बे हो जाते हैं। इसके बालों का रंग भूरे से लेकर पीला-भूरा होता है। यह झुण्ड में रहने वाला जानवर है जो गर्मियों में अकेले रहना पसन्द करता है लेकिन जाड़ों में इनके बड़े-बड़े झुण्ड बन जाते हैं। ये दलदली भूमि वाले जंगल और घास के मैदानों में रहना पसन्द करते हैं।

इनका रंग मूलत: भूरा ही होता है। इनकी चमड़ी का रंग ऋतुओं के अनुसार हल्का और गहरा होता है। नरों का रंग मादाओं से अधिक गहरा भूरा होता है। पीठ से पेट तक पहुँचते-पहुँचते इनका रंग हल्का होता जाता है। पांवों और पूंछ का भीतरी भाग मटमैला सफेद होता है। समय-समय पर इनके सींग गिरते रहते हैं। मौसम के प्रभाव के कारण भिन्न-भिन्न स्थानों पर सींग गिरने के समय में भिन्नता पाई जाती है। गर्मियों में ही इनके सींग पकते हैं। इनके सींगों की खूबसूरती उनकी अधिकता और मूल शाखाओं की लम्बाई के आधार पर आंकी जाती है।

आज से कुछ वर्ष पहले तो बारहसिंगे भारत के विभिन्न प्रदेशों में पाये जाते थे। अब तो ये उत्तर भारत के खीरी जिले के पश्चिमी भाग तक ही सिमटकर रह गये हैं।

जहाँ बड़ी-बड़ी घास उगी हुई हो, जहाँ सूखी और कड़ी मिट्टी में वृक्ष उगे हुए हों, ऐसा ही क्षेत्र इन्हें पसन्द है। इन्हें तेज ढलुआ जमीन पसन्द नहीं है। एक तो इसकी गर्दन जो पुष्ट और बालों से ढकी हुई होती है, पर बड़े-बड़े सींगों का भार पड़ा होता है। शरीर से भी भारी होने के कारण ये दौड़ नहीं पाते। अपनी सुरक्षा हेतु भी तेज ढालों की पहाड़ी जमीनें ये पसन्द नहीं करते।

बारहसिंगा घुम्मक्कड़ जीव नहीं है। ये जिस टुकड़े में रहते हैं, वहीं अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं क्योंकि जिस प्रकार की दलदली घासों से भरा इलाका इन्हें पसन्द है, वैसा स्थान इतनी आसानी से उपलब्ध नहीं होता।

बारहसिंगा प्राय: झुण्ड में ही रहते हैं। ये अक्सर रात्रि में विचरण नहीं करते और सुबह व शाम को देर तक चराई करते हैं। दिन में आराम करते हैं।

इनकी नजर व श्रवणशक्ति कमजोर होती है परन्तु इनकी सूंघने की शक्ति बहुत तेज होती है। जिस स्थान से शेर या शेर की नस्ल का कोई जानवर जा रहा हो या जा चुका हो, वहाँ पहुँचते ही ये उसकी महक को पकड़ लेते हैं। ऐसे में ये या तो चौकन्ने हो जाते हैं या भाग खड़े होते हैं। बारहसिंगा जब स्वयं को खतरे में पाकर सचेत होता है तो यह अपनी गर्दन सीधी कर कान खड़े कर लेता है तथा सूंघने की कोशिश करता है। ऐसा करते हुए यह गर्दन आकाश की ओर उठा लेता है तथा इसकी दुम भी खड़ी हो जाती है। भयग्रस्त होने पर यह पांव पटकने लगता है तथा खतरे को अत्यन्त निकट जानकर चिल्ला भी पड़ता है।

बारहसिंगा यूरोप के बहुत से स्थानों और एशिया के उत्तरी भाग में पाए जाते हैं। भारत में हिमालय की तराई, उत्तर प्रदेश, असम एवं सुन्दरवन में देखा जा सकता है। बारहसिंगा संकटग्रस्त प्राणियों की श्रेणी में है। मध्य भारत में इनकी संख्या 200 से भी कम है। इसके बचाव के लिए कड़ी सुरक्षा एवं जनजाग्रति की आवश्यकता है।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

सूरज

सूरज सिर पर,
चढ़ आया है।

चिड़ियों ने गगन,
चहकाया है।

तुम भी अपना,
बिस्तर छोड़ो।

उठ कर लो,
तुम व्यायाम।

सफल होंगे,
सभी काम।

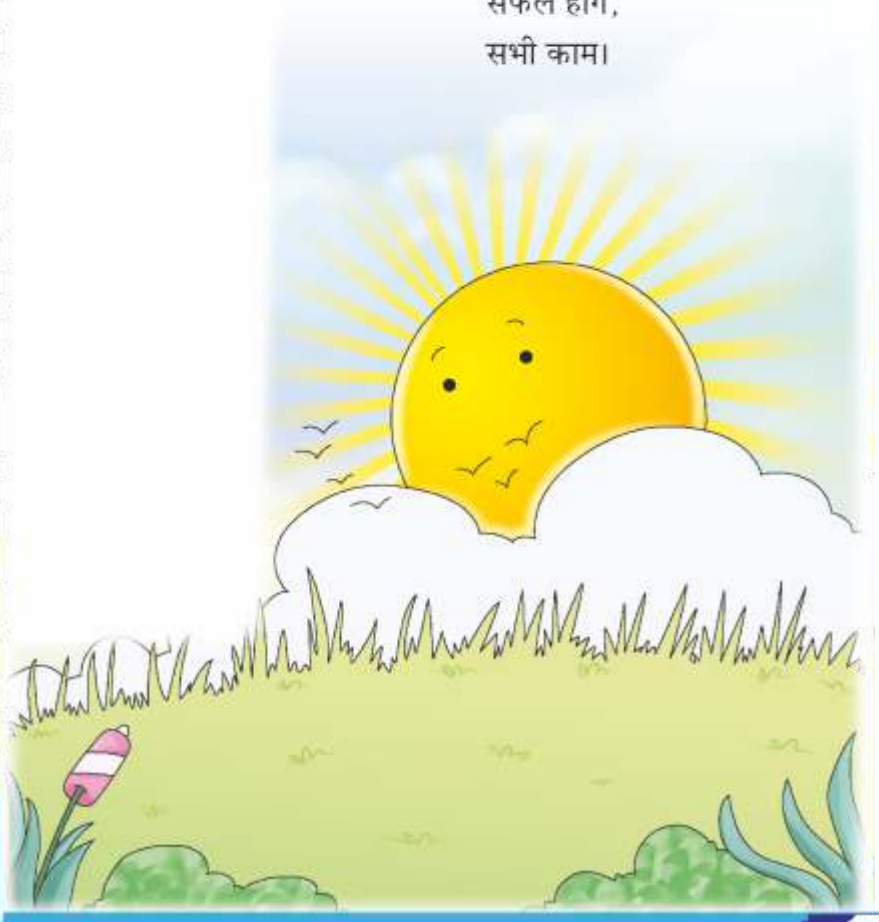

कविता : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

सोनपरी-सी किरणें

नभ से भू पर आतीं किरणें।
नया सवेरा लातीं किरणें।

अंधकार को मार भगातीं।
मन के सोये तार जगातीं।
गीत जागरण के ही गातीं।
पात-पात को गले लगातीं।

कर्तव्यों की राह दिखाकर।
श्रम के फूल खिलातीं किरणें।
किरणों के सब हैं दीवानें।
कलियां लगती हैं मुस्कानें।

भौंरे लगते बीन बजाने।
चिड़ियां भी लगती हैं गाने।
अपना गैर नहीं ये जानें।
सबसे हाथ मिलातीं किरणें।

किरणें रवि के कर कहलातीं।
किरणें जड़ता को दहलातीं।
किरणें कण-कण को सहलातीं।
किरणें जन का मन बहलातीं।

सोनपरी-सी जग में आकर-
प्रेमिल पाठ पढ़ाती किरणें।

कहानी : शिवचरण मंत्री

मानव की कहानी

एक था नन्हा बंदर। बंदर का नाम था बंटी। बंटी बड़ा ही नटखट और चंचल था। एक जगह पर चुपचाप बैठे रहना बंटी को अच्छा नहीं लगता था। बंटी को एक जगह से दूसरी जगह कूदना, फुदकना अच्छा लगता था।

सर्दी का मौसम था। दोपहर का समय था। बंटी गाँव के एक पेड़ पर बैठे अपने शरीर को खुजला रहा था। यकायक उसकी नजर पेड़ की जड़ की तरफ पड़ी। उसे पेड़ के नीचे चींटियों की एक कतार दिखाई दी। उसने गौर से देखा कि चींटियां बड़ी ही अनुशासित होकर एक पंक्ति में चल रही हैं और प्रत्येक चींटी के मुँह में कुछ दबा हुआ है। चींटियां धीरे-धीरे एक दूसरी के पीछे एक विशेष दिशा में ही जा रही थीं।

बंटी चींटियों का यह माजरा देख चकित रह गया। अपनी उत्सुकता को शान्त करने को वह पेड़ से नीचे उतरा और जा पहुँचा चींटियों की पंक्ति के पास। वहाँ पहुँचकर उसने आगे बढ़ रही एक चींटी से पूछा– बहन, आपने अपने मुँह में क्या दबा रखा है और आप कहाँ जा रही हैं?

चींटी पंक्ति से एक ओर हटी और सहजता से बोली– बंदर भैया, हमारे मुँह में खाना है और हम अपने बिल की ओर जा रही हैं।

–आप भोजन को बिल में क्यों ले जाती हो?

–वहाँ हमारे बच्चे, रानी चींटी और कई अन्य चींटियां रहती हैं। उनका खाना हम ही ले जाती हैं। बंदर भैया, इसके सिवाय हम बरसात, तूफान, प्राकृतिक विपदाओं व अन्य मुसीबत के समय के लिए भी हम बिल में कुछ भोजन सुरक्षित रखती हैं।

–आप एक ही पंक्ति में बड़ी अनुशासित होकर कैसे चल लेती हो?

–हमारे शरीर में एक विशेष प्रकार की गंध निकलती है। इसी कारण हम एक ही पंक्ति में बड़ी अनुशासित होकर चलती हैं।– इतना कहकर चींटी आगे बढ़ गई और बंटी भी अब दूसरे पेड़ की शाखा पर बैठकर सुस्ताने लगा।

पेड़ पर बैठे-बैठे बंटी की नजर एक गिलहरी पर पड़ी। बंटी ने देखा कि गिलहरी के मुँह में एक मूंगफली का दाना है और वह किसी खास स्थान की ओर तेजी से बढ़ रही है। बंटी पेड़ से नीचे उतरा और गिलहरी के पास जा पहुँचा। उसने गिलहरी को रोका और पूछा– दीदी, आप अपने मुँह में यह दाना दबाकर कहाँ जा रही हैं?

–मैं यह दाना लेकर अपने कोटर में जा रही हूँ।

–क्यों?– बंटी ने आश्चर्य से अगला प्रश्न किया।

–कोटर में मेरे नन्हें-नन्हें प्यारे बच्चे हैं। उनको खिलाने के लिए मैं मूंगफली के दाने कोटर में

एकत्रित करती हूँ। इसके सिवाय मुसीबत के समय जैसे बरसात आना, बीमार होने के कारण जब मैं बाहर नहीं जा सकती हूँ उस समय के लिए मैं खाने की चीजें और अन्य वस्तुएं अपने कोटर में एकत्रित करके रखती हूँ।

बंटी कोई दूसरा प्रश्न पूछता उससे पहले ही गिलहरी अपने कोटर की ओर बढ़ गई और बंटी मुँह लटका कर पुन: पेड़ की शाखा पर जाकर बैठ गया।

शाखा पर बैठे-बैठे बंटी की नजर सामने फूलों से लदे पौधे पर जा ठहरी। उसने फूलों पर मंडराती एक मधुमक्खी देखी। वह तुरन्त पौधे के समीप पहुँचा और बोला– ओ मधुमक्खी बहन! आप इन फूलों पर बार-बार क्यों बैठ रही हो? आप बार-बार इनको सूंघकर उड़कर कहाँ जाती हो? इस तरह आप इन फूलों को क्यों बर्बाद कर रही हो?

–फूलों को नुकसान पहुँचाये बिना मैं इनसे मीठा रस चूसती हूँ जिसे मैं अपने छत्ते (घर) में इकट्ठा करती हूँ और मधु (शहद) बनाती हूँ।

–ओह! तो आप भी चींटी, गिलहरी की तरह भोजन का संग्रह करती हो?

–हाँ, तुमने ठीक ही कहा। मैं भी चींटी, गिलहरी आदि कुछ प्राणियों की तरह भोजन संग्रहित करके रखती हूँ ताकि आड़े वक्त (मुसीबत के समय) में बच्चों और मुझे भूख सहन न करनी पड़े।– मधु बहन इतना कहकर बंटी को शहद खाने का निमंत्रण देकर अपने मधु छत्ते की ओर चली गई। बंटी देखता ही रह गया।

शाम हुई। बंटी अपनी माँ के पास आया। माँ बरगद की एक शाखा पर बैठी सुस्ता रही थी। माँ ने बंटी से कुछ बातें की तो बंटी ने माँ से प्रश्न किया– माँ, चींटी जैसे नन्हें प्राणियों का भी घर होता हैं जिसे बिल कहते हैं। इसी प्रकार गिलहरी आदि के भी कोटर होता है। पर हम लोगों के चीजें संग्रह करने, बुरे समय से बचने के लिए घर क्यों नहीं होता है?

बंटी की बात सुनकर माँ ने हँसते हुए कहा– घर! संग्रह करने, आपातकाल के लिए घर! हमारे लिए तो बस पेड़ की शाखाएं ही घर है। हम तो इसी पर रहते आये हैं और रहेंगे। पर मैंने सुना है जिस बंदर प्रजाति ने पक्षियों, कीट पतंगों की तरह घर बनाना सीख लिया वे मानव बन गये।– इतना कहकर माँ फुदक कर दूसरी शाखा पर जा बैठी।

बाल कविताएं : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

चोर बंदर

चोर बंदर की हुई सगाई,
सबने दी जम उसे बधाई।
जब इक दिन बारात थी आई,
चोरी की स्कीम बनाई।
माल बहुत था जब वह लाया,
सबने उसकी करी पिटाई।

बिल्ली

बिल्ली करती म्यांऊ म्यांऊ,
चूहों को मैं चट कर जाऊं।
सबका ही मैं मन बहलाऊं,
डांट डपट मैं सह न पाऊं।

खरगोश

सहज सलौना सा खरगोश,
मृग का छौना सा खरगोश।
लगता बौना सा खरगोश,
पर है सोना सा खरगोश।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : नदी की अपेक्षा समुद्र के पानी में तैरना आसान क्यों होता है?

उत्तर : किसी वस्तु के एकांक आयतन की संहति को उस वस्तु का घनत्व कहते हैं। नदी की अपेक्षा समुद्र के पानी का घनत्व अधिक होता है। जब तुम समुद्र के पानी में तैर रहे होते हो तो तुम्हारे द्वारा हटाए गये पानी का भार नदी में तैरने पर हटाए गये पानी के भार से ज्यादा होता है। अतः समुद्र के पानी में तुम्हारे भार में नदी की अपेक्षा अधिक कमी आ जाती है। दूसरी ओर, अधिक घनत्व के कारण समुद्र के पानी में उत्प्लावन-बल (वस्तु को द्रव में डुबोने पर द्रव द्वारा उस पर ऊपर की ओर लगाया गया बल) भी अधिक लगता है जिससे तुम आसानी से तैर सकते हो।

प्रश्न : नमकीन पानी में अंडा क्यों तैरता है?

उत्तर : आमतौर पर पानी का घनत्व कम होता है किन्तु नमक मिलाते ही पानी का घनत्व भी बढ़ने लगता है। जब घनत्व में वृद्धि हो जाती है तो स्वाभाविक है कि उत्प्लावन-बल में भी वृद्धि हो। बस, इसी कारण से साधारण जल की अपेक्षा नमकीन पानी में अंडा सरलता से तैरता रहता है।

प्रश्न : लोहे का बना हुआ जहाज पानी में तैरता है परन्तु लोहे की सुई पानी में क्यों डूब जाती है?

उत्तर : किसी भी वस्तु के पानी में तैरने के लिए यह जरूरी है कि उसके द्वारा हटाए गये पानी का भार उससे अधिक हो। लोहे का बना हुआ जहाज जब पानी में चलता है तो उसके द्वारा हटाए गये पानी का भार जहाज के भार से अधिक होता है। दूसरी ओर, सुई को पानी में डालने पर वह अपने भार से कम भार का पानी ही हटा पाती है। परिणामस्वरूप, सुई पानी में डूब जाती है तथा लोहे का बना हुआ जहाज पानी में तैरता है।

प्रश्न : पानी भरने से गुब्बारा क्यों फूल जाता है?

उत्तर : किसी वस्तु के तल पर लम्बवत् लगने वाले बल को प्रणोद कहते हैं। गुब्बारे में पानी भरने पर उसकी सतह पर यही बल कार्य करता है जिसके कारण गुब्बारा फूल जाता है। जैसे-जैसे तुम गुब्बारे में अधिक पानी डालते जाते हो, गुब्बारा भी और अधिक फूलता रहता है। ऐसा इसलिए होता है कि प्रणोद बढ़ जाता है क्योंकि प्रणोद सदैव द्रव की ऊँचाई पर ही निर्भर करता है।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

सबसे अमीर कौन?

एक बार एक सराय में बहुत से लोग ठहरे हुए थे। रात्रि उन्हें वहीं गुजारनी थी। गरमी का दिन था। ठहरे हुए लोगों में बहुत सारे ऐसे भी थे, जो काफी धनी-मानी थे, जिनके पास धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी।

जब सभी लोग रात का भोजन कर चुके तो सराय के खुले प्रांगण में सोने जाने के पहले वे एक जगह बैठकर परस्पर बातचीत करने लगे। कई तरह की बातें उनके बीच हुईं। इसी सिलसिले में एक आदमी ने एक सवाल खड़ा कर दिया– 'आज दुनिया में सबसे अमीर आदमी कौन है?'

अपनी-अपनी जानकारी के अनुसार सभी ने किसी न किसी व्यक्ति का नाम बताया। एक सन्त भी उन लोगों के बीच चुपचाप बैठा सबकी बातचीत सुन रहा था। किसी ने उससे भी पूछ ही डाला– 'सन्त जी, आपके विचार से इस दुनिया में सबसे अमीर आदमी कौन है?'

सन्त थोड़ी देर चुप रहा। फिर संयत स्वर में बोला– 'वे लोग तो बिल्कुल नहीं, जिनके बारे में अभी आप लोगों ने कहा है। सबसे अमीर होने की बात तो दूर रही, वे लोग अमीर भी नहीं हैं। दरअसल अमीर होना सरल नहीं है और जो वास्तव में अमीर हैं, हम उसे आसानी से जान नहीं पाते।'

किसी की भी समझ में सन्त की बात नहीं आयी। अतएव एक आदमी ने सन्त से पूछा– 'फिर आप ही बताइए, अमीर हम किसे कहें?'

–मेरे ख्याल से अमीर वही है जिसमें और अधिक कुछ पाने की चाह नहीं रहे। लखपति, करोड़पति और अरबपति आदि अमीर नहीं हैं अगर उनमें और दौलत पाने की चाह बनी हुई है। जिसके पास जो भी कुछ है, वह उससे सन्तुष्ट है तो समझ लो, वह उसी में अमीर है। असली अमीर वही है।

दिल होता जिसका बड़ा, वहीं बड़ा कहलाय।
धन का बड़ा बड़ा नहीं, मन का भरम मिटाय॥

सन्त ने अपनी बात पूरी की।

अब सराय में मौजूद सभी व्यक्तियों ने सन्त की बातें सुनकर अमीरी के सम्बन्ध में अपने विचारों को बदल डाला। वे अच्छी तरह जान-समझ गये कि जो जितना संतोषी है, वह उतना ही बड़ा अमीर है। असंतोषी व्यक्ति कभी अमीर हो ही नहीं सकता।

आलेख (सेहत) : कैलाश जैन एडवोकेट

कब्ज की रामबाण औषधि : इसबगोल

हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक पदार्थों और जड़ी-बूटियों पर आधारित थी। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में साध्य-असाध्य रोगों का इलाज प्रकृति प्रदत्त वनस्पतियों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जाता था। समय की धुंध के साथ हम कई प्राकृतिक औषधियों को भूला बैठे। 'इसबगोल' जैसी चमत्कारी प्राकृतिक औषधि भी उन्हीं में से एक है। हमारे वैदिक साहित्य और प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता है। संस्कृत साहित्य में इसे 'स्निग्घबीजम्' नाम से सम्बोधित किया गया है।

पर्याप्त जानकारी और ज्ञान के अभाव में शनैः शनैः हमारे देश में चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत इसबगोल का इस्तेमाल कम होता गया। बाद में हमारे मुल्क में मुसलमानों के आगमन के साथ ही इसबगोल का पुनःप्रवेश हुआ। दुनिया की तकरीबन हर प्रकार की चिकित्सा पद्धति में इसबगोल के प्रमाण मिलते हैं। दसवीं सदी में फारस के मशहूर हकीम अलहेरवी और अरबी हकीम अविसेन्ना ने इसबगोल द्वारा चिकित्सा के सम्बन्ध में व्यापक प्रयोग व अनुसंधान किये। 'इसबगोल' फारसी शब्द है जिसका शब्दिक अर्थ होता है 'पेट को ठंडा करने वाला पदार्थ' तथा गुजराती में 'उठनुंजीरू' कहा जाता है। इसका वनस्पति शास्त्रीय नाम 'प्लेटेगा इंडिका' तथा यह 'प्लेटो जिनेली' समूह का पौधा है।

इसबगोल पश्चिम एशियाई मूल का पौधा है। यह तना रहित एक झाड़ीनुमा पौधा है जिसकी अधिकतम ऊँचाई ढाई से तीन फुट तक होती है। इसके पत्ते महीन होते हैं तथा इसकी टहनियों के सिरे पर गेहूं की तरह बालियां लगती हैं तथा फूल आते हैं। फूलों में नाव के आकार के बीज होते हैं। इसके बीजों पर सफेद व पतली झिल्ली होती है। यह झिल्ली ही दरअसल इसबगोल की भूसी कहलाती है। बीजों से भूसी निकालने का कार्य हाथ से चलाई जाने वाली चक्कियों और मशीनों से किया जाता है। इस भूसी का सर्वाधिक औषधीय महत्व है।

इसबगोल के औषधीय महत्व को प्रायः प्रत्येक चिकित्सा पद्धति में स्वीकार किया गया है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसके बीजों को शीतल, शांतिदायक, मलावरोध को दूर करने वाला तथा अतिसार, पेचिश और आंत के जख्म आदि रोगों में उपयोगी बताया गया है। प्रसिद्ध चिकित्सक मुजर्रवात अकबरी के अनुसार नियमित रूप से प्रतिदिन इसबगोल का सेवन करने से श्वसन रोगों तथा दमे में बहुत राहत मिलती है। अठाहरवीं शताब्दी के प्रतिभाशाली चिकित्सा विज्ञानी फ्लेमिंग व रॉक्सबर्ग ने भी अतिसार रोग के उपचार के लिए इसबगोल को रामबाण औषधि बताया।

रासायनिक संरचना के अनुसार इसबगोल के बीजों व भूसी में 30 प्रतिशत तक 'म्यूसिलेज' नामक तत्व पाया जाता है। म्यूसिलेज की इस प्रचुर मात्रा के कारण इसके बीजों में बीस गुना पानी मिलाने पर भी यह एक स्वाद रहित जैली के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसके अलावा इसबगोल में 14.7 प्रतिशत एक प्रकार का अम्लीय तेल होता है जिसमें खून के कोलस्ट्रोल को घटाने की क्षमता होती है।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में भी दिनों-दिन इसबगोल का महत्व बढ़ता जा रहा है। पाचन-तंत्र से सम्बन्धित रोगों की औषधियों में इसका इस्तेमाल हो

रहा है। अतिसार, पेचिश जैसे उदर रोगों में इसबगोल की भूसी का इस्तेमान न केवल लाभप्रद है बल्कि यह पश्चात्वर्ती दुष्प्रभावों से भी मुक्त है। भोजन में रेशेदार पदार्थों के अभाव के कारण कब्ज जैसी बीमारी हो जाना आजकल सामान्य बात है और अधिकांश लोग इससे पीड़ित हैं। आहार में रेशेदार पदार्थों की कमी को नियमित रूप से इसबगोल की भूसी का सेवन कर दूर किया जा सकता है। यह पेट में पानी सोखकर फूलती है और आंतों में उपस्थित पदार्थों का आकार बढ़ाती है। इससे आंतें अधिक सक्रिय होकर कार्य करने लगती हैं और पचे हुए पदार्थों को आगे बढ़ाती हैं।

यह भूसी शरीर के टॉक्सिन्स और बैक्टीरिया को भी सोखकर शरीर से बाहर निकाल देती है।

इसबगोल की भूसी तथा इसके बीज दोनों ही विभिन्न रोगों में एक प्रभावी औषधि का कार्य करते हैं। इसके बीजों को शीतल जल में भिगोकर उसके अवलेह को छानकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। नाक से खून निकलने की स्थिति में इसबगोल के बीजों को सिरके के साथ पीसकर कनपटी पर लेप करना चाहिए।

कब्ज के अतिरिक्त दस्त, आंव, पेटदर्द आदि में भी इसबगोल की भूसी लेना लाभप्रद रहता है। अत्यधिक कफ होने की स्थिति में इसबगोल के बीजों का काढ़ा बनाकर रोगी को दिया जाता है।

इसबगोल के बीजों का इस्तेमाल करने से पूर्व उन्हें भली प्रकार साफ कर लिया जाना चाहिए। तत्पश्चात इन्हें धोकर सूखा लें। भूसी को सीधे भी दूध या पानी के साथ लिया जा सकता है अथवा एक कप पानी में एक तोला भूसी और कुछ शक्कर डालकर जैली तैयार कर लें तथा इसका सेवन करें।

सामान्यतः इसबगोल की भूसी और बीजों का उपयोग रात में सोते समय किया जाता है किन्तु आवश्यकतानुसार इन्हें दिन में दो या तीन बार भी लिया जा सकता है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी क्या कर रही है? जल्दी के चक्कर में तू कीचड़ में भी पैर रखे जा रही है। तेरे पैर भी गन्दे हो रहे हैं। किट्टी जल्दी करने से कोई काम तुम पहले तो कर पाओगी परन्तु अच्छा कभी नहीं।

बिंटू तू चुप रह और बस जल्दी चल मुझे हमेशा कोई भी काम सबसे पहले करना पसन्द है। मैं हमेशा प्रथम आना चाहती हूँ।

कप्तान (खरगोश): किट्टी, बिंटू आज हमारा क्रिकेट मैच दूसरी टीम के साथ चल रहा है। तुम दोनों आराम से और अच्छे से खेलना।

क्यों न मैं सबसे पहले बहुत सारे रन बना दूँ। मेरी जय-जयकार हो जायेगी टीम में।

अरे ये क्या! किट्टी पहली बॉल पर ही आउट हो गई।

किट्टी तुम आगे बढ़कर क्यों खेली? तुम्हें बोला गया था न कि आराम से खेलना। तुमने कर दिया ना सत्यानाश।

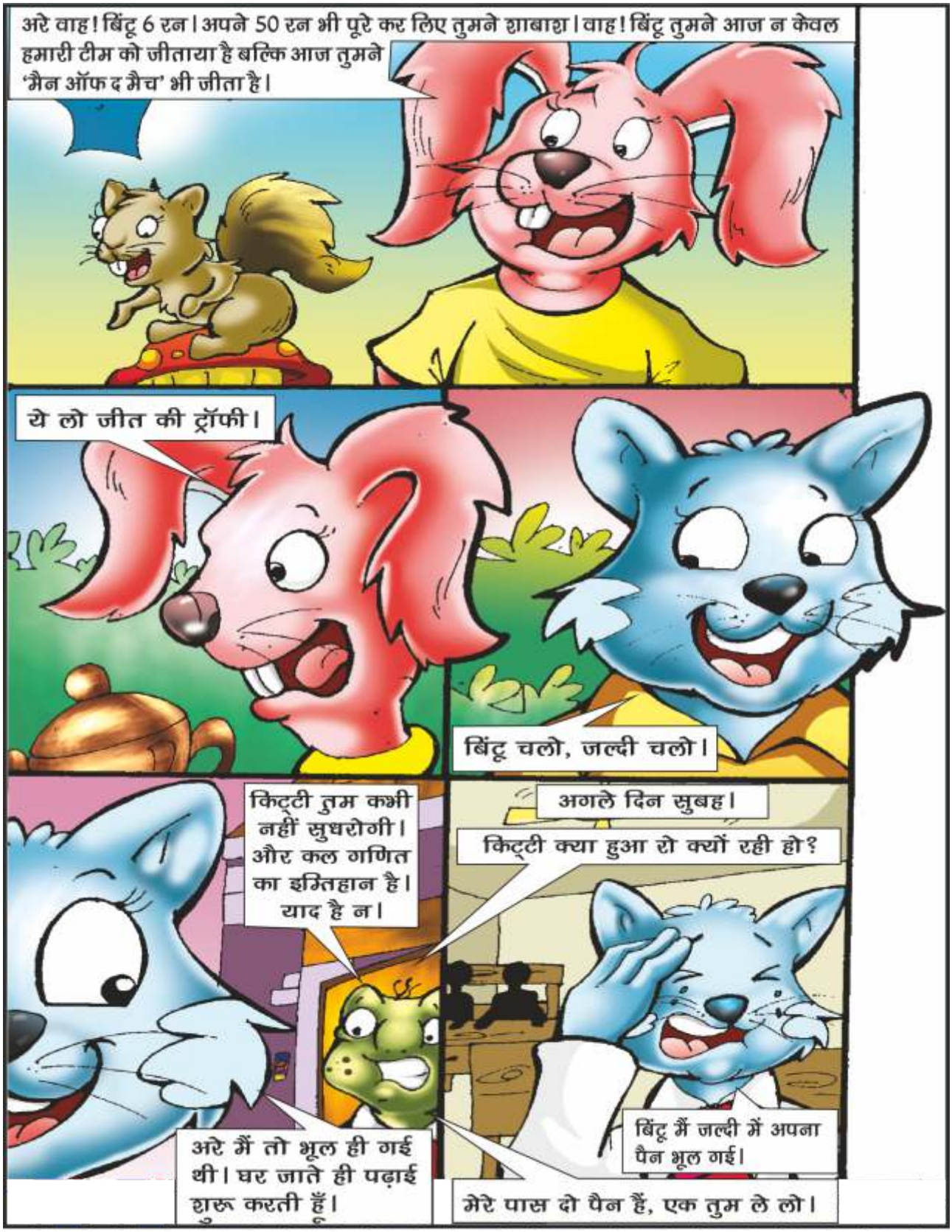
अरे वाह! बिंटू 6 रन। अपने 50 रन भी पूरे कर लिए तुमने शाबाश। वाह! बिंटू तुमने आज न केवल हमारी टीम को जीताया है बल्कि आज तुमने 'मैन ऑफ द मैच' भी जीता है।
ये लो जीत की ट्रॉफी।
बिंटू चलो, जल्दी चलो।
किट्टी तुम कभी नहीं सुधरोगी। और कल गणित का इम्तिहान है। याद है न।
अरे मैं तो भूल ही गई थी। घर जाते ही पढ़ाई शुरू करती हूँ।
अगले दिन सुबह।
किट्टी क्या हुआ रो क्यों रही हो?
बिंटू मैं जल्दी में अपना पैन भूल गई।
मेरे पास दो पैन हैं, एक तुम ले लो।

वाह ! मैं सबसे पहले पेपर करूँगी। मुझे सब आता है।
ये लो सर!
किट्टी बेटा, अभी तो बहुत समय बचा है तुम देख लो कुछ रह तो नहीं गया।
नहीं सर! मुझे सब आता है। मैंने सब कर दिया।
किट्टी, तुम रो क्यों रही हो?
बिंटू मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। मैं जल्दबाजी में आधा पेपर छोड आई। मुझे पता ही नहीं चला।
मैंने कहा था न किट्टी। जल्दबाजी करके सिर्फ पहले किया जा सकता है परन्तु अच्छा नहीं। ये बात आगे से हमेशा ध्यान रखना।

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ भय और वैर से मुक्ति पानी हो तो 'अहिंसा' या 'प्रेम' का मार्ग अपनाना होगा। इसके सिवाय दूसरा कोई मार्ग हो ही नहीं सकता।
– भगवान महावीर

★ फूल खिलने दो मधुमक्खियां अपने आप उसके पास आ जायेंगी। चरित्रवान बनो जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा। – रामकृष्ण परमहंस

★ गुण न हो तो रूप व्यर्थ है। विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है, उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है। भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है।

★ प्रसन्नतापूर्वक उठाया गया बोझ हल्का महसूस होता है। – अज्ञात

★ महानता दूसरों के दोषों को छिपाती है, तुच्छता दूसरे के दोषों को निकालती है। – तिरुवल्लुवर

★ धर्मरहित विज्ञान लंगड़ा है व विज्ञानरहित धर्म अंधा। – आइंस्टीन

★ जो आत्म-संयमी नहीं है वह स्वतंत्र नहीं है।
– पाइथागोरस

★ हमारे मन के विचार कर्म के पथ-प्रदर्शक होते हैं।

★ दया मनुष्य का स्वाभाविक गुण है।

★ पुरुषार्थ जब किया जाता है तो साक्षात् ईश्वर सहायता करते हैं। – प्रेमचन्द

★ कोई भी अच्छा कार्य या आदर्श कभी नहीं मिटता। वह मानव जाति में सदा जीवित रहता है।
– सैमुअल स्माइल्स

★ प्रतिद्वंदी द्वारा की गई प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है।
– टामस मूर

★ अधिक कहने से रस नहीं रह जाता, जैसे गूलर के फल को फोड़ने पर कुछ नहीं निकलता।
– तुलसीदास

★ मौन, क्रोध की सर्वोत्तम चिकित्सा है।

★ उठो, जागो और तब तक चलते रहो, जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो। – स्वामी विवेकानन्द

★ अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। – मार्कस ऑरेलियस

★ हम दबाव से अनुशासन नहीं सीख सकते।
– महात्मा गाँधी

★ स्वयं डरा हुआ व्यक्ति दूसरों को भी डरा देता है।
– प्रश्नव्याकरण सूत्र

★ सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है, जो प्रगति के लिए सर्वश्रेष्ठ परिश्रम करता है। – सुकरात

★ मित्र का हृदय मजाक में भी नहीं दुखाना चाहिए। – साइरस

★ सुन्दर विचार अनमोल धन है। – डी. पाल

★ आचरण एक ऐसे दर्पण के सदृश है जो हर मनुष्य को उसका प्रतिबिम्ब दिखाता है। – गेटे

★ ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। – फ्रेंकलिन

★ ऊँचाई पर पहुँचने के पश्चात् बादल बनकर भलाई के लिए बरसो। – नित्यानन्द स्वामी

★ खुशी का सबसे बड़ा रहस्य त्याग है।
– एंड्रयू कार्नेगी

★ वही साधुता है कि स्वयं समर्थ होने पर क्षमाभाव रखें। – भागवत्

★ आदतें लोहे की जंजीर के समान हैं जो हमें बांधकर रखती हैं। – लेक स्टीन

बाल कहानी : सीताराम गुप्ता

योगदान

एक बार एक जंगल में भयंकर आग लग गई। सभी आग बुझाने में जुट गये। जिसके हाथ में जो भी पात्र आया पानी से भर-भरकर आग पर उड़ेलने लगा। वहीं जंगल में चिंटी नाम की एक नन्हीं गौरैया भी रहती थी। सबको आग बुझाने में जुटे देख नन्हीं चिंटी से भी रहा नहीं गया। चिंटी भी अपनी नन्हीं चोंच में पानी भर-भरकर आग पर डालने लगी। आग की भयानक लपटों के कारण चिंटी का बुरा हाल हो गया लेकिन उसने अपनी कोशिश जारी रखी।

झुप्पू नामक एक कौआ जो दूर एक पेड़ की डाल पर बैठा यह तमाशा देख रहा था। चिंटी के पास आया और बोला– नन्हीं गौरैया क्या तुम समझती हो कि तुम्हारी नन्हीं चोंच का बूंद भर पानी इस भयंकर आग को बुझाने में कोई सहायता कर सकेगा?

चिंटी ने चोंच का पानी आग पर डालते हुए जवाब दिया– ये तो मैं नहीं जानती पर एक बात जरूर जानती हूँ कि जब भी आग के बारे में बातें होंगी मेरा नाम आग लगाने वालों अथवा तमाशा देखने वालों में नहीं बल्कि आग बुझाने वालों में लिया जायेगा। लोगों को इससे प्रेरणा ही मिलेगी और संकट के समय अथवा लोकहित के कार्यों में वे अपनी शक्ति के अनुसार योगदान देने से कभी पीछे नहीं हटेंगे।

झुप्पू अपना सा मुँह लेकर रह गया। जंगल में लगी आग शान्त होने के बाद वहाँ एक सभा का आयोजन किया गया। सभा में भविष्य में आग से बचने के उपायों पर चर्चा की गई तथा साथ ही उन सबकी प्रशंसा भी की गई जिन्होंने आग बुझाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। सभा में चिंटी

की भी खूब प्रशंसा की गई और उसके योगदान को सबसे अधिक महत्वपूर्ण बताया गया क्योंकि नन्हीं चिंटी अपने जीवन की परवाह न करते हुए आग बुझाने में लगी रही। कहाँ जंगल की भयंकर आग और कहाँ नन्हीं सी एक गौरैया? चिंटी की प्रशंसा करने के साथ-साथ उसे फूलों का एक गुलदस्ता भी भेंट किया गया। अब तो झुप्पू की समझ में भी ये बात आ गई कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता।

वास्तव में काम, वो भी लोकहित का काम, छोटा या बड़ा नहीं होता अपितु काम करने का उद्देश्य महान हो, भावना पवित्र हो और दृष्टिकोण सकारात्मक हो तो हर छोटा कार्य भी महान हो जाता है। झुप्पु ने फैसला किया कि वह भी दूसरों के काम में कमी निकालने की बजाय खुद भी सबकी मदद किया करेगा।

झुप्पू उड़कर एक बगीचे में गया और वहाँ से सुन्दर-सा एक फूल तोड़कर लाया। उसने वह फूल चिंटी को दिया और उसकी खूब प्रशंसा भी की। चिंटी ने भी कहा– झुप्पू तुम कितने अच्छे हो! आओ आज से हम एक-दूसरे के दोस्त बन जाएं।

उस दिन के बाद झुप्पू सचमुच अच्छा बन गया। वह सभी की खूब मदद करता। सारे जंगल में चिंटी के साथ-साथ झुप्पू की भी प्रशंसा होने लगी।

कविता : ओ.पी. राजकुमार

खरबूजा

आओ आज सभी हम जानें
यह रहस्य अनजाना,
खरबूजा को देख खरबूजा
क्यों बदले रंग अपना।

एक खरबूजा पक जाता तो
दूजा भी पक जाता,
उसकी सुगंध तो भीनी-भीनी
खाने को मन करता।

इथाइलिन नाम की गैस
मीठी गंध की होती,
यही गैस उसकी बेलों में
खुद ही निर्मित होती।

यही गैस है खरबूजे की
इक दूजे में जाती,
जाते ही वह खरबूजों में
पका उन्हें झट देती।

पके हुए मीठे खरबूजे
बिकने को जब आते,
उन्हें खरीदकर बड़े मजे से
जी भरकर हम खाते।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

मिठाई

मोटू हलवाई ने आवाज लगाई,
बच्चों खा लो खूब मिठाई।
रसगुल्ले के संग जलेबी,
रसमलाई भी है बनाई।।

काजू कतली का टेडी है,
लड्डू का है डोरेमान।
इमरती में रास्ता खोजो,
कहाँ छिपा है इसका छोर।।

हाथ न पर तुम गंदे करना,
संग अपने टिशु भी रखना।
मम्मी से पूछे बिना तुम,
यहाँ मिठाई कभी न चखना।।

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन एडवोकेट

सफरनामा छाते का

मानव ने हमेशा हर स्तर पर प्रकृति की चुनौतियों का मुकाबला करने के प्रयास किए हैं। चिलचिलाती धूप हो या मूसलाधार बारिश, आदमी ने इनसे बचने के लिए छाते का आविष्कार किया। छाता आज एक अत्यन्त सामान्य उपकरण और सामान्य इस्तेमाल की वस्तु समझा जाता है। छाते के वर्तमान स्वरूप तक पहुँचने की यह विकास यात्रा हजारों वर्षों पुरानी है।

छाते का प्रचलन कब और कैसे हुआ, यह ठीक-ठाक बता पाना तो मुमकिन नहीं है,किन्तु प्राचीन हिन्दू तथा बौद्ध संस्कृति में 'छत्र' के रूप में इसके प्रमाण मिलते हैं। भारतीय आदिग्रंथ वेद एवं पुराणों में भी कई स्थानों पर छत्र शब्द का प्रयोग मिलता है, जो छतरी अथवा छाते का ही पर्याय है। समस्त जैन ग्रंथों, तीर्थकरों के चित्रों और मूर्तियों में 'छत्र' पाया जाता है। इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध की प्राचीन प्रतिमाओं में भी छत्र मिलता है। वस्तुत: छत्र छाते का ही प्रारंभिक स्वरूप था।

धार्मिक अनुष्ठानों के अतिरिक्त राजकीय कार्यों में भी छत्र का विशेष महत्व था। प्राचीनकाल के सम्राटों के छत्र बेशकीमती होते थे। इनमें बहुमूल्य रत्न जड़े होते थे। राजकीय प्रतिष्ठा और सम्मान का प्रतीक समझे जाने वाले इन छत्रों का प्रयोग भारत के अलावा चीन, तुर्की, यूनान, फारस आदि देशों में भी किया जाता था। मिस्र और यूनान के पांच हजार वर्ष पुराने भवनों में छाते से मिलते-जुलते चित्र पाये गये हैं जो बारिश और धूप से बचाव के लिए सम्राटों द्वारा उपयोग में लाये जाते थे। रोम में छाते को केवल महिलाओं के उपयोग की वस्तु समझा जाता था।

धार्मिक और राजकीय स्तर से हटकर देखें तो जन-सामान्य में 'छाते' की सर्वप्रथम परिकल्पना एक बड़े आकार के हैट के रूप में रही होगी। चीनी पुस्तकों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि वहाँ महिलाएं हजारों वर्ष पूर्व एक बहुत बड़े घेरे वाले हैट का इस्तेमाल धूप से बचाव के लिए करती थीं।

छाते के आधुनिक स्वरूप का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। इंग्लैंड, फ्रांस जैसे यूरोपीय देशों में तो मात्र दो शताब्दियों पूर्व छाते का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। कपड़े के छाते का चलन कब प्रारम्भ हुआ इसके सम्बन्ध में स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु सन् 1770 के आस-पास एक फ्रेंच लेखक मेकडोनाल्ड ने अपनी स्पेन यात्रा के संस्मरणों में रेशमी कपड़े के बने छातों का उल्लेख किया है।

प्रारम्भ में यूरोपीय देशों में छातों का उपयोग केवल शाही परिवार के लोग व अमीर वर्ग के लोग ही कर सकते थे। इंग्लैंड में सबसे पहले जोन्स नामक एक व्यक्ति जब बाजार में छाता लगाकर निकला तो लोगों ने उसे अजीब दृष्टि से देखा। उसका उपहास उड़ाया गया। बच्चों ने तो उस पर पत्थर भी फेंके। लेकिन धीरे-धीरे छाते का चलन आम होता गया। इंग्लैंड में पहले छातों में बेंत की तीलियां लगाई जाती थीं। बाद में लोहे की तीलियों का इस्तेमाल किया जाने लगा।

सन् 1772 में भारत का एक धनी व्यापारी वाल्टीमोर के बंदरगाह पर छाता खोले उतरा तो वहाँ भगदड़ मच गयी। वहाँ के लोगों ने पहले कभी छाता नहीं देखा था। पूरे वातावरण में दहशत फैल गयी। लोग इधर-उधर भागने लगे। बच्चे और औरतें भयभीत होकर चीखने लगे। स्थिति पर नियंत्रण पाने के लिए पुलिस की सहायता लेनी पड़ी।

फ्रांस में कपड़े के समेटे जा सकने वाले छाते का प्रचलन काफी पहले हो चुका था। लेकिन छाते को 18वीं शताब्दी से पूर्व तक जन-सामान्य में पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित नहीं हो सकी। इसे मात्र फैशन और वैभव का प्रतीक माना जाता था। हालांकि उस समय भी अनगिनत रंगों और डिजाइनों के छाते महिलाओं के लिए उपलब्ध थे।

सत्रहवीं शताब्दी से पूर्व छातों में भारी धातु की छड़ का इस्तेमाल किया जाता था। सन् 1840 में सर्वप्रथम हेनरी हालैंड ने इसमें स्टील की छड़ का उपयोग किया। सन् 1874 में इंग्लैंड में गोलाकार इस्पात की कमानियों वाले कपड़े के छाते का पेटेंट करवाया गया।

विकास की क्रमिक प्रक्रिया के दौरान छाते में कई छोटे-मोटे परिवर्तन निरन्तर होते रहे। आज सामान्यतः छाता काले रंग के जलरोधी कपड़े से बनाया जाता है। इसमें एक लम्बी डंडी पर मुड़ने वाली कमानियों का छत्र लगा होता है, जिस पर कपड़ा मढ़ा जाता है। इस काले कपड़े को जलरोधी बनाने के लिए इस पर मोम का लेप किया जाता है। भारत में छाता बनाने का पहला कारखाना सन् 1902 में मुम्बई में स्थापित हुआ। इस समय हमारे देश में 750 से भी अधिक छाता बनाने के कारखाने हैं जिनका वार्षिक उत्पादन दो करोड़ छातों से भी अधिक है। भारत द्वारा बड़े पैमाने पर छातों का विदेशों को निर्यात किया जा रहा है।

छातों का यह सफर अब कई पड़ावों से गुजर कर एक ऐसे मुकाम पर आ पहुँचा है, जहाँ सैकड़ों किस्मों के एक से एक उम्दा छाते उपलब्ध हैं। छाता जगत का सबसे आधुनिक आयाम है, एयरकंडीशन छाता। पश्चिमी देशों में लोकप्रिय हो रहे इस छाते में एक छोटी-सी बैटरी चलित मशीन लगी होती है जो छाते के हर तरफ ठंडी हवा फेंकती है। पंख वाले छाते भी बाजार में उपलब्ध हैं। वैज्ञानिक अब सौर छाता बनाने में जुटे हैं। सौर ऊर्जा से चलने वाला यह छाता आपको कड़कती सर्दी में गर्माहट देगा।

पढ़ो और हँसो

किरायेदार मकान मालिक से बोला– क्या किया जाए? हवा चलने से खिड़की दरवाजे हिलने लगते हैं और बारिश होने पर छत से पानी टपकने लगता है?

–खिड़की दरवाजा पूरा खोलकर शुद्ध हवा का आनन्द लीजिए और टपकते पानी को बाल्टी में जमाकर बर्तन धोने के काम लाइए।– मकान मालिक ने जवाब दिया।

ग्राहक : होटल के बैरे को गुस्से से बोला– मैंने तुम्हें कहा था कि गर्म और करारी रोटी लेकर आना।

बैरा प्लेट में बहुत सारी रोटियां रखकर ले आया और कहने लगा– खुद ही छांटकर ले लो।

ग्राहक ने एक-एक करके सारी रोटियां देखीं, अन्त में एक रोटी को हाथ लगाकर उसने कहा– यह दे दो।

बैरा : यह तो प्लेट है।

पिताजी : (अर्पिता से) तुम्हें कितनी बार कहा है कि लड़ाई-झगड़ा मत किया करो। देखा न अपना दूसरा दांत भी गंवा दिया।

अर्पिता : पापा गंवाया कहाँ है वह तो मेरी मुट्ठी में है।

– बबलू कुमार (सुल्तानपुर)

बॉक्सिंग प्रतियोगिता हो रही था। मनोहर लाल रिंग में उतरे हुए बॉक्सर का मनोबल बढ़ा रहे थे।

–शाबाश! तोड़ दो दांत, लगाओ मुक्का।

साथ बैठे व्यक्ति ने पूछा– क्या आप भी बॉक्सर हैं?

–जी नहीं, मैं तो दांतों का डॉक्टर हूँ।– मनोहर लाल बोले।

बेटा : पापा, कल रात को मैं डेढ़ बजे तक पढ़ता रहा।

पापा : झूठ बोलते हो। रात को ग्यारह बजे के बाद तो हमारे मोहल्ले की बिजली चली गई थी।

बेटा : चली गई होगी। मैं तो पढ़ाई में इतना मगन था कि मुझे पता ही नहीं चला कि बिजली चली गई है।

जांच करने के बाद डॉक्टर ने मरीज से पूछा– आप सुबह क्या पीते हैं, चाय, काफी या दूध?

–रहने भी दीजिए, डॉक्टर साहब, बेकार तकलीफ क्यों करते हैं, मैं घर से खा-पीकर आ रहा हूँ।– मरीज ने टोकते हुए कहा।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

बस में भीड़ अधिक होने के कारण एक यात्री को बस के अन्दर धक्के लग रहे थे। कभी वह धक्के से आगे हो जाता, तो कभी पीछे हो जाता। जब वह उतरने लगा तो कंडक्टर ने कहा– "भाई साहब टिकट तो ले लो।

यात्री बोला– भाई साहब किस बात की टिकट? मैं तो सारे रास्ते पैदल ही चलता आ रहा हूँ।

एक देश की क्रिकेट टीम के कप्तान ने अपना स्पष्टीकरण कुछ यों दिया– मैच हार गये तो क्या हुआ, टॉस तो हमीं जीते थे ना।

दो व्यक्ति आमने-सामने खड़े होकर बातें कर रहे थे।

पहला : मूर्ख और समझदार में क्या अन्तर है?

दूसरा : यही कि मूर्ख मेरे सामने खड़ा है और समझदार तुम्हारे सामने।

एक मकान मालिक अपने किरायेदार से हमेशा लड़ता रहता था। एक दिन सुबह-सुबह किरायेदार नहा-धोकर मकान मालिक को एक कटोरा दूध देते हुए बोला– पीजिए...

मकान मालिक : (आश्चर्य से) भाई मैं तो रोज तुम्हें बुरा-भला कहता हूँ। फिर भी तुम मुझे दूध पिला रहे हो?

किरायेदार : जी, आज नागपंचमी है न।

पुलिस : मैं जनता का हमदर्द हूँ। तुम कौन हो?

चोर : मैं जनता का सिरदर्द हूँ।

सोनिया : (अपने पति से) आज मेरा 'बर्थ डे' है। आप मुझे गिफ्ट में क्या दोगे?

पति : वो जो बाहर नीले रंग की होंडा सिटी कार खड़ी है न...

सोनिया : हाँ हाँ हाँ।

पति : उस रंग का 'हेअर पिन'।

पिता : बेटा, तुम्हारे पेपर कैसे हुए हैं?

बेटा : मेहनत तो मैंने फर्स्ट क्लास की थी, पेपर सैकण्ड क्लास हुए थे और रिजल्ट थर्ड क्लास रहा।

नगरपालिका के ऑफिस के आगे लगे बोर्ड पर लिखा था– कृपया यहाँ शोर न करें।

उसके आगे किसी ने लिख दिया– नहीं तो नींद में डूबे कर्मचारी जाग जाएंगे।

शेरू : पापा मुझे बाजा ला दो।

पापा : नहीं तुम उसे बजाकर मुझे तंग करोगे।

शेरू : नहीं पापा, जब आप सो जाओगे तब मैं बजाया करूंगा। – दिनेश राय (दिल्ली)

दो बाल कविताएं : राधेलाल 'नवचक्र'

ठठेरा

ठठेरा धातुओं के बरतन,
है ठाठ से बनाता।
आग की भट्ठी में धातु जब,
गलकर खूब पिघलता।।

उसे वह सांचे में ढाल,
मन माफिक चीजें बनाता।
जा हाट में उन्हें बेचकर,
घर का खर्च चलाता।।

कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

हलवाई

मोटू हलवाई ने,
आवाज लगाई।
मम्मी–पापा के,
संग आकर।
बच्चों खा लो,
खूब मिठाई।

रसगुल्ला है,
लड्डू भी है।
रस मलाई,
भी है बनाई।

बल से बुद्धि बड़ी है!

कोयल बोली– तोता भैया,
गजब हो गई बात।
वनराज सिंह को मार दिया,
बौने कछुए ने प्रात।।

–ठीक ही हुआ– बोला ये तोता,
अन्यायी को मिली सजा है।
पूर्वजों ने सच कहा है–
बल से बुद्धि सदा बड़ी है!!

संग्रहकर्ता : रामअवध राम (गुरैनी, गाजीपुर)

अनमोल वचन

★ हमारे विचार, शरीर व मन जितने निकट हैं उससे भी निकट परमात्मा है।

– स्वामी विवेकानन्द

★ जिसके साथ सत्य है, वह अकेला रहते हुए भी बहुमत में है। – डगलस

★ सद्गुरु की शरण गये बगैर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। – ज्ञानेश्वरी गीता

★ अगर आत्म-सम्मान चाहते हो तो दूसरों का सम्मान करो। – कठोपनिषद

★ सत्य का प्रभाव स्वत: प्रकट होकर रहता है। सत्य में असीमित तेज व बल होता है।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ जिसने स्वयं पर काबू पा लिया है वह हजार शत्रुओं पर फतह पाने वाले से भी बड़ा है।

– महात्मा बुद्ध

★ हम यदि ईश्वर से डरेंगे तो फिर हमें मनुष्य का डर नहीं रहेगा। – महात्मा गाँधी

★ कम बोलना ही लाभदायक है। अधिक बोलने से तो कुछ न कुछ झूठ निकल ही जाता है और झूठ मन को मलीन करता है।

– पारसमणि शास्त्र

★ ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि दूसरों की अच्छाइयों पर पड़ती है जबकि मूर्ख लोग दूसरों के अवगुण टटोलते हैं। – विनोबा भावे

★ जिसके मन में संतोष है उसके लिए हर जगह सम्पन्नता है। – संस्कृत लोकोक्ति

★ वृक्ष अपने सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप सहता है किन्तु अपने आश्रितों की गर्मी अपनी छाया द्वारा दूर करता है। – कालीदास

★ सहानुभूति एक ऐसी विश्वव्यापी भाषा है जिसे सभी प्राणी समझते हैं। – जेम्स एलेन

★ आत्मविश्वास असम्भव लगने वाले कार्यों को भी सम्भव बना देता है। – आचार्य श्रीराम शर्मा

★ सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें, बल्कि यह है कि जो आप करें वह अच्छा हो।

– जे.एम. स्वेअर्टचंग

★ जो धैर्य और मेहनत से नहीं घबराता सफलता उसकी दासी है। – ईसा मसीह

★ जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उनको लूटने में नहीं।

★ विश्वास प्रेम की प्रथम सीढ़ी है।

★ मन एक भीरू शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है।

★ चित्त की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है। – प्रेमचंद

★ अहंकार ऐसी आग है जो तमाम संचित पुण्यों को जलाकर नर्क की ओर धकेल देती है।

– संत कबीर

मार्च अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **अलका, अभिजीत** 13, 9 वर्ष
गाँव : बंशीपुर, पोस्ट : अमिलाई,
जिला : चन्दौली (उ.प्र.)

2 **खुशी वधवा** 10 वर्ष
अशोक विहार कॉलोनी, नूरमहल रोड,
नकोदर, जिला : जालंधर (पंजाब)

3 **मानव** 10 वर्ष
156, अवतार इन्क्लेव,
पश्चिम विहार, दिल्ली

4 **सिद्धांत पाण्डेय** 12 वर्ष
थाना रोड, जगतदल,
जिला : 24 परगना (पं बंगाल)

5 **नवदिशा त्यागी** 9 वर्ष
531, डीडीए फ्लैट्स,
लोकनायकपुरम, दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

गुरुप्रीति (शिवराम पार्क, दिल्ली), समीक्षा (सुन्दर नगर, अजमेर), सक्षम (अम्बाला), परानूर सिंह (सिहाली, उधमसिंह नगर), रघुवीर सिंह (पीपलवास, राजसमंद), गर्विता (विकास नगर, भिवानी), वैभव किशोर (डांगोली बांगर), अक्षिता (अमृतपुरी, दिल्ली), आन्या (कुदासन, गाँधी नगर), मानवी बंसल (लहरागागा, संगरूर), अनमोल मोंगा (मंडी डबवाली) प्रथम (हरदेव नगर, दिल्ली), काश्वी (नारायणगढ़, अम्बाला), ऋतिका पाल (ऋषिकेश), आरूषि, कनिका, अनुज, यशिका, खुशी, लवप्रीत, कोमल, कमलदीप, पुष्पित सिंह, महकदीप सिंह, सन्मान, अक्षित, श्रेया, अर्पिता, मानवी, राकेश कुमार, सुरिन्दर (बठिण्डा)।

मई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 मई तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जुलाई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

रंग भरो

नाम .... आयु ....

पुत्र/पुत्री ....

पूरा पता ....

....

....पिन कोड ....

हर माह की तरह फरवरी माह की हँसती दुनिया समय पर प्राप्त हुई।

हँसती दुनिया मिलते ही मैं तुरन्त पढ़ने बैठ गया। मुझे इसमें 'पढ़ो और हँसो' तथा 'किट्टी' एवं 'दादा जी' बहुत पसन्द आये।

'सबसे पहले' में शिक्षाप्रद बातों के साथ ही सम्पूर्ण अवतार बाणी के शब्द की व्याख्या भी बहुत ही सुन्दर ढंग से सरल भाषा में समझाई गई है।

कहानियों में 'संगति का प्रभाव' (परशुराम संबल), 'नन्हा बरस गया' (ओमप्रकाश क्षत्रिय) विशेषतौर पर पसन्द आई। कविताओं में 'रंग-बिरंगे फूल' (हरजीत निषाद), 'मानव और स्वास्थ्य' (डॉ. परशुराम शुक्ल) अच्छी लगीं।

विशेष/लेख भी सभी जानकारी भरपूर और शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्धक हैं। सच में हँसती दुनिया बच्चों के लिए शिक्षाप्रद पत्रिका है। – प्रदीप कुमार सचदेवा (मोगा)

हँसती दुनिया का फरवरी अंक प्राप्त हुआ। सभी लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक व अच्छे हैं। 'दादा जी' चित्रकथा में पढ़ाई की महत्ता बहुत अच्छे तरीके से समझाई गई है कि सभी को अच्छे तरीके से पढ़ाई कर अपना जीवन सुन्दर बनाना चाहिये।

कहानी 'अपनी कमाई' व 'मेहनत की कमाई' में मेहनत करने की प्रेरणा दी गई है कि हमें मेहनत की कद्र करनी चाहिये।

कविता 'मानव और स्वास्थ्य (डॉ. परशुराम शुक्ल) में पद्य रूप में स्वास्थ्य सम्बन्धी सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। स्तम्भ व लेख भी जानकारी भरपूर हैं। प्रभु कृपा करे यह पत्रिका ऐसे ही दिन-प्रतिदिन विकास करती रहे।

– अमिता मोहन (बठिण्डा)

बाल कविता : जगतार 'चमन'

मदर्स डे (12 मई) पर विशेष

माँ

थपकी दे मुझे सुलाती माँ,
भूख लगे दूध पिलाती माँ।

जब-जब मैं जाता हूँ रूठ,
गाल सहला मुझे मनाती माँ।

गाकर लोरी मुझे सुलाये,
हँसने के लिए गुदगुदाती माँ।

ममता की मूरत लगे प्यारी,
प्यार ही मुझ पर लुटाती माँ।

नेह की वर्षा मुझ पर करती,
'चमन' में फूल खिलाती माँ।

कीमत समय की

– महेन्द्र सिंह शेखावत (बजरंग वाटिका, जयपुर)

अन्त परीक्षा का हुआ,
सुना दिया परिणाम।
गर्मी की छुट्टी हुई,
सब बच्चों के नाम।।

अनमोल समय न खोना,
और बढ़ाया ज्ञान।
कीमत समय की जाने,
उसे मिले सम्मान।।

छुट्टियों का समय मिला,
करना पूरा योग।
नहीं गंवाना एक पल,
सब करना उपयोग।।

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029
(TS)

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang
Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)